बापू की मीठी-मीठी बातें

(मूल मराठी पुस्तक 'बापूजींच्या गोड गोष्टी' का रूपान्तर)

दूसरा भाग

साने गुरुजी

ISBN 978-93-83982-69-1

सौजन्य: सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी- 221 001

Email-sarvodayavns@yahoo.co.in

प्रकाशकीय

'बापू की मीठी-मीठी बातें' नामक यह पुस्तक मराठी के कोमल-करुण-कलम के धनी स्व. साने गुरुजी की रचना है। साने गुरुजी का नाम मराठी-क्षेत्र में प्रत्येक बालक और किशोर की जबान पर है । बालक का हृदय उनकी रचना में इतना समरस हो जाता है कि भीतर की तरलता आँखों की राह झर-झर नि:सृत होने लगती है । उनके शब्द भावों का अनुगमन करते हुए चले चलते हैं ।

बापूजी (महात्मा गांधी) के जीवन के कुछ मधुर-मीठे प्रसंगों को बालकों के लाभार्थ साने गुरुजी ने अपना शब्द-माधुर्य प्रदान किया है । ये घटनाएँ बड़ी ही प्रेरक और उद्बोधक हैं ।

साने गुरुजी बालकों के सुह्रद तो थे ही, बाल-हृदय भी थे । उनकी यह प्रसादी बालकों को सचमुच मीठी-मीठी लगेगी ।

'बापू की मीठी-मीठी बातें' का पहला भाग पाठकों की सेवा में पहुँच चुका है । उसमें 58 कहानियाँ थीं । यह दूसरा भाग प्रस्तुत है । इसमें 63 कहानियाँ हैं । मराठी में छोटी-छोटी 6 पुस्तिकाओं की कहानियाँ हिन्दी के पाठकों के समक्ष दो भागों में प्रस्तुत की गयी हैं । हिन्दी के प्रेमी पाठकों तथा बालकों में इस पुस्तक का पर्याप्त स्वागत हुआ है, जिनके कारण इस पुस्तक का बारहवाँ संस्करण को प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है।

.

अनुक्रम

खण्ड 1 : कला-प्रेमी और विनोदी

१. वह अद्भुत प्रपात

२. देहाती कलर और बापू

३. विनोद में भी शिक्षा

४. हस्ताक्षर के लिए शर्त

५. गांधीजी का अनोखा हास्य-विनोद

६. कन्याकुमारी का दर्शन

७. पिता-पुत्र में विनोद

८. मानस-पुत्र बनने का आनन्द

९. बालकों से दोस्ती

१०. हस्ताक्षर की फीस

११. 'तुम्हारे मुकाबले में आधा हूँ।'

खण्ड 2 : राष्ट्रपिता

१२. बापू की मर्यादा

१३. बच्चों के साथ तैरने गये

१४. 'गांधी बाबा को सबकी चिन्ता है'

१५. लेने के बदले दो

१६. बापू का आशीर्वाद जीवन-परिवर्तनकारी

१७. बिना सुँघनी के दाँत उखड़वाया

१८. एक मंगल प्रसंग

१९. नसीहत देनेवाले बापू

२०. इंग्लैण्ड आने के लिए तीन शर्तें

२१. अमरीकी पत्रकारों को मौन का पाठ

२२. सम्राट से भेंट!

२३. भारत का तानाशाह

२४. बच्चे और बापू

२५. नमक-सत्याग्रह

२६. स्त्रीत्व रक्षा के प्रहरी

२७. गांधीजी और लोकमान्य तिलक

२८. इच्छा शक्ति का वह चमत्कार !

खण्ड 3 : कर्म-योगी

२९. हरएक काम भगवान् की पूजा

३०. गांधी का अनोखा व्यायाम

३१. गांधीजी की कर्म-पूजा : कताई

३२. मिताहारी बापू

३३. प्रयत्नशील बापू

३४. सफाई श्रेष्ठ कार्य

३५. आगाखाँ-महल में बापू का दिनक्रम

३६. टहलने का व्यायाम

३७. हरिजन-कार्य में एक वर्ष

३८. राजकुमारी को शादी में उपहार

खण्ड 4 : प्रेम-सिन्धु

३९. सर्वत्र आत्मदर्शन का पाठ

४०. गांधीजी की हार्दिकता

४१. गांधीजी की निर्भयता

४२. गांधीजी की करुणा

४३. गांधीजी की वत्सलता

४४. वचन-पूर्ति

४५. सबका ख्याल रखनेवाले बापू

४६. दो नजरबन्द

४७. बापू की गोद में साँप

४८. आजाद भारत का पहला राष्ट्रपति कौन?

४९. 'आप ही की गाड़ी में जाऊँगा'

५०. छोटे सेवकों की याद

५१. नन्हा गोपू

५२. 'मैं बेसहारा हो गया'

५३. मगनलाल गांधी

५४. बच्चे का काम पहले

५५. अहिंसा का पाठ

५६. सोने का खिलौना

खण्ड 5 : ईश्वर-भक्त

५७. प्रार्थना पर श्रद्धा

५८. भगवान भरोसे

५९. कृपा किसकी ?

६०. ‘वह दूर है, फिर भी निरन्तर पास है’

६१. राम-नाम का पोषण

६२. बापू की निद्रा

६३. ‘ताटी उघड़ा ज्ञानेश्वरा’

बापू की

मीठी-मीठी बातें

दोस्तो, महात्माजी की जीवन-गाथा से मैं कुछ और कहानियाँ सुनाता हूँ। मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। इसलिए पिछले भाग की भाँति इस भाग में भी छोटी-छोटी कहानियाँ ही सुनाऊँगा। बड़ी कहानियाँ बड़े होने पर खुद पढ़ लेना। ठीक है न ?

खण्ड - १

कला-प्रेमी और विनोदी

१. वह अद्भुत प्रपात

सन् 1924 में कांग्रेस का अधिवेशन बेलगाँव में था । श्री गंगाधरराव देशपाण्डे और दूसरे कार्यकर्ताओं ने कितनी व्यवस्था की थी, कैसा समारोह रचाया था ! सबको आराम मिला था, सब खुश थे । महात्माजी काम में डूबे हुए थे । वे ही उस कांग्रेस के अध्यक्ष थे । कांग्रेस की सभा समाप्त हुई । सब लौटने लगे । कुछ लोग आसपास के प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थान देखने गये । एक कार्यकर्ता महाशय गांधीजी के पास आये और बोले :

“गांधीजी, शरावती का प्रपात देखने चलेंगे ? भारत में ही नहीं, सारे संसार में सबसे ऊँचा प्रपात है यह । 800 फुट की ऊँचाई से गिरता है । दृश्य बड़ा भव्य है । चलेंगे ? महादेवभाई और काकासाहब की भी चलने की इच्छा है । आप चलें तो वे भी चलेंगे । ना नहीं कहियेगा ।”

मैं भला कैसे चलूँ ? मैं क्या अब दृश्य देखते घूमूँ ? काम कितना पड़ा है ? महादेव भी जा नहीं सकेगा । काक को ले जाइये ।”

“गांधीजी, इतनी ऊँचाई से गिरनेवाला वह प्रपात ! सचमुच देखने लायक है । कैसे तुषार उड़ते हैं ! कैसा सुन्दर इन्द्रधनुष दिखाई देता है ! कितनी ऊँचाई से पानी गिरता है ! ऐसा लगता है, मानो हम धीर-गंभीर मूर्तिमान् अनन्त निसर्ग की सन्निधि में हैं । क्या आपने कोई प्रपात देखा है ऊँचे से गिरनेवाला ?”

“हाँ, कई बार देखा है ।”

“शरावती जितना ऊँचा ?”

“उससे भी ऊँचा ।”

“शरावती के प्रपात से बड़ा और ऊँचा प्रपात तो संसारभर में नहीं है । हमने तो भूगोल में पढ़ा नहीं ।”

“ भूगोल में नहीं होगा । परन्तु मैं अपनी आँखों से कई बार देखता हूँ । और आपने भी वह देखा है । कितनी ऊँचाई से पानी गिरता है !”

“वह भला कौन सी नदी है ? कैसा पानी है ? हमने तो देखा नहीं ।”

“वर्षा का पानी ! पर्जन्यधाराएँ कितनी ऊँचाई से गिरती हैं ! वह पानी शरावती के पानी की अपेक्षा अधिक ऊँचाई से नहीं गिरता ? मैंने सच कहा कि नहीं ?”

सब हँस पड़े। महात्माजी भी हँसे । काकासाहब और अन्य लोग प्रपात देखने गये । महात्माजी ने उन्हें जाने को कहा, लेकिन स्वयं काम में तल्लीन रहे ।

कई दिनों बाद महादेवभाई किसी काम से मैसूर गये थे, तब वह प्रपात देख आने की व्यवस्था महात्माजी ने उनके लिए कर दी थी ।

२. देहाती कलर और बापू

बहुतों को लगता है कि गांधीजी रूक्ष पुरुष थे । कई लोग मानते हैं कि उनके लिए जीवन में कला या विनोद का स्थान नहीं था । लेकिन यह बिल्कुल गलत है । काठियावाड़ में डसो नाम की एक छोटी रियासत थी । उस रियासत के मालिक थे दरबार गोपालदास । गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद उनकी सिखावन की छाप दरबार गोपालदासजी पर बहुत गहरी पड़ी । उन्होने अपनी छोटी रियासत को आदर्श बनाने का निश्चय किया । गाँवों में साक्षरता का काम प्रारंभ हुआ । हर घर का आँगन रोज लीपा जाने लगा, रांगोली से चौक पूरा जाने लगा । गाँवों में जनता के न्यायमन्दिर शुरू हुए । उनमें रियासत के अधिकारियों के विरुद्ध भी मुकदमे चलाये जाते थे । गाँवों में भिन्न-भिन्न कलाओं को भी प्रोत्साहन दिया जाने लगा । सामुदायिक नृत्य, गरबा आदि उत्सव भी होने लगे ।

कुल मिलाकर डसो गोकुल के समान गूँजने लगा । एक बार दरबार गोपालदासजी के मन में आया कि अपने यहाँ की ग्रामीण नृत्य-कला शहर के लोगों को दिखायी जाय । अत: उन्होंने अहमदाबाद जाने का निश्चय किया । डसो की ग्रामीण कलाकारों की मण्डली साथ लेकर दरबार गोपालदासजी अहमदाबाद गये । अहमदाबाद शहर में ग्रामीण नृत्य, टिपरी (गरबा नृत्य) आदि के अति सुन्दर कार्यक्रम हुए ।

कार्यक्रम के बाद दरबार गोपालदासजी गांधीजी से मिलने साबरमती आश्रम आये । बोले : “शहर के लोगों को भी बहुत पसन्द आये ।”

बापू बोले : “लेकिन वह तो आपने पहले शहर में दिखाये । मेरे आश्रम में तो नहीं दिखाये ।”

“आपके आश्रम में दिखाऊँ ?”

"पूछना क्या है ? गाँवों की निष्पाप कला का मैं रसिक हूँ ।"

अगले दिन आश्रम में उन ग्रामीण कलाकारों ने महात्माजी के सामने अत्यन्त सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया । कार्यक्रम जारी था । महात्माजी ने दरबार गोपालदासीजी से कहा : "डसो का राजा अपने गाँव में नृत्य में शरीक होता है, यह मैं जानता हूँ । फिर यहाँ क्यों वह अलग बैठा है ? गोपालकृष्ण क्या गोपालों के साथ नाचने में शरमायेगा ?"

इतना सुनना था कि दरबार गोपालदासजी उठे और उन ग्रामीण कलाकारों में शामिल हो गये । नाचते-नाचते वे अपनी सुध-बुध भूल गये । उन्हें असीम आनन्द हुआ । गांधीजी खुश हो गये ।

अगले दिन आश्रम में उन सब कलाकारों को गांधीजी ने बड़े प्रेम से भोज दिया और स्वयं परोसा ।

ऐसे थे बापू !

ग्रामीण जीवन में आनन्द भरनेवाली अकृत्रिम और निष्पाप कलाएँ बापूजी को अत्यन्त प्रिय थी ।

३. विनोद में भी शिक्षा

यह तब की बात है, जब गांधीजी सेवाग्राम आश्रम में थे। आश्रम का भोजन अत्यन्त सादा होता था। तरह-तरह का जायकेदार भोजन बनाना मना था। सादा ही आहार हो, परन्तु भूख लगने पर खाया जाय, तो स्वास्थ्य उत्तम रहता है, यह वे जानते थे। फिर आश्रम में तो अस्वाद-व्रत का पालन करना होता था।

अस्वाद का अर्थ है, जीभ के चटोरेपन को छोड़कर अन्न का सेवन। भोजन सादा होता था, परन्तु सबको पेटभर खाने की छूट थी। गांधीजी को जिस दिन फुरसत रहती, उस दिन वे स्वयं सबको परोसते थे। कोई कम खाता, तो उसकी तबीयत के बारे में वे पूछताछ करने लगते। सबमें आनन्द, समाधान और सन्तोष फैलाने का प्रयास करते थे।

एक बार एक अमरीकी विद्वान पत्रकार लुई फिशर सेवा-ग्राम आश्रम में उनसे मिलने आये थे। सप्ताह भर ठहरे। एक दिन दोपहर के भोजन में वे गांधीजी के साथ बैठे। गांधीजी आश्रम में अस्वाद-व्रत का आग्रह रखते थे। परन्तु बाहरी मेहमान पर जबरदस्ती नहीं करते थे। यथाशक्ति उनकी रुचि के अनुकूल खिलाते थे। उस दिन उन्होंने फिशर को भोजन के साथ आम खाने को दिया। उन्हें वह बहुत पसंद आया।

खाते-खाते फिशर ने गांधीजी से विनोद में पूछा : "गांधीजी, आप इन लोगों को सादा भोजन खिलाते हैं। बेचारों को अपना स्वाद मारने के लिए क्यों कहते हैं ? आप तो अहिंसा के हिमायती, फिर 'मारना' सिखाते हैं, यह कैसे ?"

उनका मजाक गांधीजी ताड़ गये। लेकिन वे सवाये विनोदी थे। जवाब दिया : हाँ, फिशर साहब, यदि संसार स्वाद मारने तक ही हिंसा का उपयोग सीमित कर दे तो मैं सारे संसार को वैसा करने की छूट दे दूँगा।"

इस पर सारे लोग हँस पड़े ।

गांधीजी बात-बात में इस प्रकार का विनोद करते थे । इससे गंभीर चर्चा के बीच भी मुक्त वातावरण का अनुभव आता था ।

गांधीजी ने एक बार कहा था : मेरे जीवन में विनोद न होता तो मेरा जीवन कब का नीरस बन जाता ।"

४. हस्ताक्षर के लिए शर्त

वेब मिलर एक अमरीकी पत्रकार थे । उन्होंने 'मुझे शांति नहीं मिली' (I found no peace) नामक एक पुस्तक लिखी है । उसमें उन्होंने गांधीजी का एक सुन्दर संस्मरण दिया है ।

सन् 1931 में गांधीजी गोलमेज-परिषद् के लिए विलायत गये थे । एक दिन वेब मिलर उनसे मिलने आये । खूब बातें होने पर सिगरेट का अपना डिब्बा आगे बढ़ाकर उन्होंने गांधीजी से कहा : "इस डिब्बे पर आप भी अपना हस्ताक्षर दीजिये ।"

उस डिब्बे पर लॉयड जॉर्ज, फ्रेंच राजनीतिज्ञ क्लेमेंकी आदि प्रख्यात व्यक्तियों के हस्ताक्षर थे । गांधीजी ने डिब्बा हाथ में लिया । खोलकर देखा और हँसते हुए कहा : "सिगरेट की यह डिबिया है । धूम्रपान के सम्बन्ध में मेरे विचार आप जानते ही हैं । मुझे यह कैसे पसंद होगा कि मेरा नाम तंबाकू से ढँका जाय ? अगर आप वचन दें कि इस डिब्बे में सिगरेट कभी नहीं रखेंगे, तो मैं हस्ताक्षर दूँगा ।

"वेब मिलर ने वचन दिया और गांधीजी ने हस्ताक्षर दिये । तब से वह अमरीकी पत्रकार उस डिब्बे में विजिटिंग कार्ड रखने लगे । वह लिखता है : "डिब्बे पर अनेक लोगों के हस्ताक्षर थे । परन्तु गांधीजी का हस्ताक्षर सबसे स्वच्छ और स्पष्ट था ।

५. गांधीजी का अनोखा हास्यविनोद

महात्माजी का हास्य अपूर्व चीज थी । पं. जवाहरलाल जी अपनी आत्मकथा 'मेरी कहानी' में लिखते हैं : "जिसने महात्माजी की हास्य मुद्रा नहीं देखी, उसने अत्यन्त मूल्यवान वस्तु खोयी, यही मैं कहूँगा ।" गांधीजी कहते थे : "मुझमें यदि हास्य-विनोद न होता, तो मैं कभी का टूट गया होता ।" काकासाहब कालेलकर महात्माजी के हास्य को मुक्तपुरुष का हास्य कहते हैं ।

सन् 1934 के अंत में कांग्रेस का अधिवेशन बंबई में हुआ था । अधिवेशन समाप्त हुआ । नेता अपने-अपने घर लौटने लगे । उस समय राजेन्द्रबाबू अध्यक्ष थे । उनको आज लौटना था । सुबह आठ बजे का समय था । वहाँ के सभा-भवन में महात्माजी, राजेन्द्रबाबू, सरदार वगैरह बड़े-बड़े लोग खड़े थे । मैं दूर से ही वह प्रसंग देख रहा था । राजेन्द्रबाबू ने महात्माजी का चरण-स्पर्श किया । वातावरण गंभीर हो गया । आँखें छलछला आयीं । वातावरण का भार कम करने का जादू महात्मा जी जानते थे । पास में ही एक स्वयंसेवक खड़ा था । महात्माजी ने उसके सिर से टोपी लेकर सरदार के सिर पर चढ़ा दी ! सब जोर से हँस पड़े । महात्माजी का मुक्त हास्य फूट पड़ा । गंभीर वातावरण पुनः उल्लासमय हो गया ।

६. कन्याकुमारी का दर्शन

कुछ महीने पहले जयप्रकाश बाबू मद्रास प्रांत के दौरे पर गये थे। तब उनकी धर्मपत्नी प्रभावतीदेवी भी छाया की तरह उनके साथ रहने लगी थीं। कन्याकुमारी के दर्शन के लिए दोनों गये थे। साथ में मित्र भी थे। भारत का अन्तिम छोर ! दो महासागर मिल रहे हैं, उमड़ रहे हैं। उधर से अरब सागर और इधर से बंगाल का उपसमुद्र दोनों हाथ मिला रहे हैं। कहते हैं, अत्यन्त गम्भीर और उदात्त दर्शन है वह ! वहाँ एक ओर सूर्य अस्त होता दिखाई देता है, तो दूसरी ओर चन्द्रमा उदित होता दिखाई देता है। पूर्व-पश्चिम समुद्रों के मिलन का भव्य दृश्य ! वहाँ का दृश्य देखकर स्वामी विवेकानन्द को समाधि लग गयी थी। वह दृश्य देखकर गांधीजी भाव-विभोर हो गये थे। प्रकृति का सौन्दर्य देखते बैठने के लिए गांधीजी के पास समय कहाँ ? लेकिन उनका एक फोटो ऐसा भी है, जब विलायत जाते समय रात में जहाज से सागर की ओर वे देख रहे हैं। देशबंधु चित्तरंजनदास की बीमारी के समय उनके साथ गांधीजी दार्जिलिंग में रहे थे। वहाँ से हिमालय दिखाई पड़ता था। गांधीजी ने अपने गुजराती 'नवजीवन' से उस दृश्य का बड़ा सुन्दर वर्णन किया था ! कहते हैं कि कन्याकुमारी के दर्शन का भी गांधीजी के चित्त पर विलक्षण प्रभाव पड़ा था।

जयप्रकाशजी और प्रभावतीदेवी ने वह उदात्त दृश्य देखा। उस दिन शुक्रवार था। महात्माजी का निर्वाण-दिवस था। उस दिन प्रभावतीजी उपवास रखती हैं। वे समुद्र-स्नान करके आयी थीं। वह अमर दृश्य देखकर वे अपने कमरे में आयीं और कातने बैठीं।

गांधीजी के साथ पहले भी वे उसी कमरे में ठहरी थीं। गांधीजी जिस कमरे में रहे थे, वही था यह कमरा। प्रभावतीजी के मन में सैकड़ों स्मृतियाँ जागृत हुईं।

“गांधीजी यहीं ठहरे थे।” यही वे बोलीं। उनसे अधिक बोला नहीं जा रहा था। बापूजी का स्मरण करते हुए वह सो गयीं।

७. पितापुत्र में विनोद

दिल्ली के वे अन्तिम दिन ! अब उन्हें अन्तिम ही कहना चाहिए । उस समय किसी को कल्पना नहीं थी कि वे अन्तिम दिन होंगे । एक दिन महात्माजी के पुत्र श्री देवदासभाई गांधीजी के पास आये थे । देवदासभाई दिल्ली में ही रहते थे । 'हिन्दूस्तान टाइम्स' के वे सम्पादक थे । रात में कुछ देर के लिए अक्सर आ जाया करते थे ।

बातचीत हुई । देवदासभाई बोले : "बापू, आज मैं प्यारेलालजी को अपने यहाँ भोजन के लिए ले जाना चाहता हूँ । ले जाऊँ ?"

"ले जाओ, जरूर ले जाओ । लेकिन क्यों रे, मुझे भोजन के लिए ले जाने की कभी इच्छा नहीं होती?" बापू ने कहा । और फिर खुलकर हँस पड़े । पिता-पुत्र का वह मधुर विनोद था !

८. मानसपुत्र बनने का आनन्द

महात्माजी ने प्रथम बार देशव्यापी सत्याग्रह शुरू कर दिया । उनकी पुकार भारत के हृदय को जगा चुकी थी । मानो दस हजार वर्षो के राष्ट्रीय इतिहास की आत्मशक्ति पुकार रही थी । वह पुकार परिचित सी लगी : "प्रार्थना करो । उपवास करो । आत्मसमर्पण करो।" यह थी वह पुकार । उस पुकार से लाखों के जीवन में क्रांति हुई ।

गांधीजी साबरमती-आश्रम में थे । एक हट्टा-कट्टा नौजवान उनसे मिलने आया । गांधीजी का वजन मुश्किल से सौ पौण्ड होगा, तो इस सुन्दर नवयुवक का दो सौ से ज्यादा था । महात्माजी का चरण-स्पर्श कर उस युवक ने उनके हाथ में पत्र दिया । पढ़कर महात्माजी गंभीर हो गये । फिर हँसते हुए बोले :

"फिर क्या करना है?"

'ना नहीं कहियेगा । मुझे अपना पुत्र मान लीजिये, मानो गोद लिया हुआ ?'

"मेरी गोद कितनी छोटी है, तू भला इसमें समायेगा कैसे?" बापू हँसते-हँसते बोले।

जमनालालजी की आँखें गीली हो गयीं । अन्त में महात्माजी ने कहा : "तो ठीक है । बन जा मेरा पुत्र । मैं अपनी तरफ से पिता का नाता रखूँगा । पुत्र का नाता निभाना तेरा काम है ।"

जमनालालजी के आनन्द की सीमा नहीं रही । फिर अन्त तक वह नाता बना रहा।

९. बालकों से दोस्ती

महात्माजी गोलमेज-परिषद् के लिए जहाज से जा रहे थे । जहाज में अंग्रेज लोगों के बच्चे गांधीजी के कमरे में झाँक-झाँक कर देखते थे । फिर इन बच्चों का परिचय हुआ । गांधीजी उनके कान पकड़ कर पीठ पर मुक्का जमाते थे । फिर कहते थे : “यह नाश्ता अब काफी है न ? अब दूसरा क्या चाहिए ? खजूर या किशमिश ?”

“खजूर नहीं, किशमिश, किशमिश”— बच्चे कहते थे । प्लेट भर-भरके बच्चे किशमिश ले जाते और प्लेटों को खाली करके फौरन् वापस आते ।

“आज अब बस”— गांधीजी हँसकर कहते और वे अबोध, निष्पाप बच्चे शुक्रिया कहकर लौट जाते ।

१०. हस्ताक्षर की फीस

महात्माजी अपने हस्ताक्षर की फीस कम से कम पाँच रुपये लेते थे । लेकिन कभी-कभी बड़ा मजा करते थे ।

एक बार एक अमरीकी सज्जन हस्ताक्षर लेने महात्माजी के पास आये ।

गांधीजी ने पूछा : "आपके पास कितने पैसे हैं ?" उन्होने जेब से अपना बटुआ निकाला । पैसे गिने । 30 रुपये निकले । गांधीजी ने उनका बटुआ हाथ में लिया और उसमें से सारे पैसे लेकर खाली बटुआ लौटाया । हस्ताक्षर दे दिये ।

परंतु वह अमरीकी सज्जन परेशान दिखाई दिया । महात्माजी हँसकर बोले : "क्या हुआ ?"

"गांधीजी, मुझे जहाज तक जाने के लिए रेल का किराया चाहिए । अब मेरे पास कुछ नहीं है ।"

"ठीक, हम हिसाब लगा लें" — गांधीजी बोले । किराया, होटल में रहने का खर्च वगैरह सब मिलाकर हिसाब किया तो पूरे 310 रुपये का जोड़ आया । तब गांधीजी ने सारे पैसे वापस लौटा दिये ।

११. 'तुम्हारे मुकाबले में आधा हूँ'

मीराबहन एक जल-सेना के अधिकारी की पुत्री हैं । गोलमेज-परिषद् के समय वे बापूजी के साथ थीं । एक भाई मीराबहन के पास आकर बोला : "मैं आपके पिताजी के मातहत 21 वर्ष रहा हूँ । मेरा दामाद ही गांधीजी के लिए बकरी का दूध लाता है । मुझे बापूजी के हस्ताक्षर दिला दीजिये ।"

आखिर गांधीजी की और उस भाई की भेंट हुई । वह बोला : "आपको आपके काम में सफलता मिले । मैंने गत महायुद्ध में भाग लिया था । लेकिन फिर युद्ध हुआ तो उसमें भाग नहीं लूँगा । युद्ध भयानक कृत्य है । मैं युद्ध का विरोध करूँगा । जरूरत पड़े तो जेल जाऊँगा और आपके ध्येय के लिए लड़ूँगा ।"

"क्या तुम्हारे बाल-बच्चे हैं ?" गांधीजी ने पूछा ।

"जी हाँ। चार बच्चे और चार बच्चियाँ हैं । कुल आठ हैं ।"

"मेरे तो चार ही बच्चे हैं । तुम्हारे मुकाबले में आधा ही हूँ । गांधीजी हँस पड़े और सबके पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गये ।

खण्ड 2

राष्ट्रपिता

१२. बापू की मर्यादा

गोलमेज-परिषद् के समय किसी पत्र में यह छप गया कि सन् 1921 में प्रिन्स ऑफ वेल्स जब भारत गये, तब गांधीजी उनके चरणों पर गिरे । गांधीजी से पूछा गया तो वे बोले : "ऐसी मनगढंत बातें बनानेवाली कल्पना-शक्ति अर्थशून्य है । मैं हरिजनों और भंगियों के आगे नतमस्तक होऊँगा, उनकी चरण-रज अपने माथे पर लगाऊँगा । परन्तु राजा के आगे कभी मस्तक झुकानेवाला नहीं हूँ । तब राजकुमार की बात ही क्या ? मदान्ध साम्राज्यशाही सत्ता के वे प्रतीक हैं । भले ही मुझे हाथी अपने पैरों तले रौंद दे, पर मैं उनके सामने सिर नहीं झुकाऊँगा । लेकिन भूल से चींटी पर भी पैर पड़ जाय, तो मैं उसे प्रणाम करूँगा ।"

१३. बच्चों के साथ तैरने गये

गांधीजी को बच्चों की संगति में बड़ा आनन्द आता था। बच्चों का संग मानो भगवान् का संग ! वे बच्चों के साथ हँसते-खेलते, विनोद करते थे। एक मद्रासी बच्चे ने एक बार उनसे जिद्द की कि "कॉफी पिलाओ"। तब उन्होने खुद कॉफी बनाकर उस बच्चे को पिलायी। इतना ही नहीं, बल्कि बड़े प्यार से पूछा : "क्या तुझे और कुछ बना दूँ ? 'इडली', 'दोसा' बना दूँ ?" गांधीजी बढ़िया रसोई बनाते थे। गांधीजी सब जानते थे। जीवन की सब उपयोगी बातें वे जानते थे। गांधीजी साइकिल भी चलाते थे। परन्तु उसकी कहानी फिर कभी सुनाऊँगा। आज दूसरा ही एक मजे का किस्सा सुनाता हूँ।

यह बात है सन् 1926 की। महात्माजी खादी-प्रचार के दौरे पर थे। आराम की दृष्टि से कुछ दिनों के लिए साबरमती-आश्रम लौट आये थे। साबरमती नदी अपने सौम्य रूप से बह रही थी। आश्रम के सदस्य नदी में नहाने जाते थे। कोई डुबकी लगा आता, तो कोई तैरता।

"बापूजी, आज आपको भी तैरने चलना चाहिए।"

"सचमुच! आज बापू को लिये बिना नहीं छोड़ेगे।"

"लेकिन बापू तैरना भूल गये होंगे।"

"तैरना कोई भूलता है? बापू, आप चलेंगे न? हमें देखना है आप कैसे तैरते हैं।"

"लोकमान्य तिलक अच्छे तैराक थे। गंगा की बाढ़ में वे कूद पड़े थे और तैरकर उस पार गये थे।"

"परन्तु लोकमान्य ने तो अभ्यास किया था। बापू, आज आप हमें तैरकर दिखाइये न। बड़ा मजा आयेगा।"

"बापू तो सिर्फ हँस रहे हैं । वे नहीं चलेंगे । चलिये न । आज हमारे साथ तैरने चलिये।"

बच्चे आज गांधीजी को घेरे उपर्युक्त बातचीत कर रहे थे । गांधीजी इनकार नहीं कर सके । जाने को तैयार हुए । बच्चे खुश हो गये । सारा आश्रम चल पड़ा । साबरमती नदी भी खुशी से उछल पड़ी, उसकी तरंगें नाच उठीं । आज बापू नदी की लहरों का सामना करनेवाले थे । ब्रिटिश सत्ता से जूझनेवाला वीर योद्धा आज साबरमती की लहरों से खेलनेवाला था । बच्चे पानी में उतरे । कहने लगे : "बापू, आइये चलिये ।" और गांधीजी कूद पड़े, उन्होने सूर मारा था और सप-सप पानी काटते हुए जा रहे थे । बच्चे आनन्दविभोर होकर जय-घोष करने लगे । तालियाँ बजाने लगे । गांधीजी का पीछा करके उन्हें छूने के लिए कुछ बच्चे चल पड़े । बड़ा मजा आया । कितना आनन्द ! 55 वर्ष की आयु में गांधीजी ने डेढ़ सौ गज की दूरी तैरकर पार की । बच्चों के आनन्द की खातिर बापू तैरने गये थे । ऐसे थे बापू ! ऐसा था हमारा लाड़ला राष्ट्रपिता ।

१४. 'गांधी बाबा को सबकी चिन्ता है'

आज एक निराली ही कहानी सुनाता हूँ । तुम लोगों ने कवि और काव्यगायक श्री सोपानदेव चौधरी का नाम सुना होगा । वे एक सत्कवि हैं, उनके काव्य-गायन का श्रवण यानी एक अपूर्व भोज का अवसर । उन्होंने एक बार महात्माजी के संबंध में स्व-रचित कविता रेडियो पर सुनायी । यह संस्मरण उन्होंने ही मुझे सुनाया था ।

एक बार महात्माजी दौरा करते हुए खान देश आये थे । जलगाँव में विराट् सभा हुई । गाँवों से हजारों किसान आये थे । गिरणा नदी के किनारे बसे हुए मछुए भी सभा में आये थे । सभा समाप्त हुई । लोगों के झुण्ड अपने-अपने गाँवों की ओर लौट रहे थे । आपस में बातें करते जा रहे थे । जाल कंधों पर डाले हुए बोल रहे थे :

"अरे यार, हम बड़े पापी हैं । गांधी बाबा तो अहिंसा की बात करता है और हम दिन-रात मछली पकड़ते हैं । हमारी सारी जिन्दगी हिंसा में ही बीतती है । भला, धंधा न करें तो करें क्या? खायें क्या ? वह (गांधीजी) कहते हैं "किसी को मत मारो ।' हम मछली मारने का धंधा छोड़ दें तो दूसरा कौन-सा कर सकेंगे ? अपने पास न खेती न बाड़ी । नदी का पानी यही अपनी खेती है, मछलियों की खेती । कैसे क्या करें ?"

"अरे, तू फिक्र क्यों करता है ? गांधी बाबा को सबकी चिन्ता है । कल स्वराज्य आने पर गांधी बाबा हमें बुलायेंगे और कहेंगे कि मछली मत मारो, हिंसा मत करो । तुम्हारे लिए यह धंधा चुन लिया है । यह सीख लो और ठीक से गृहस्थी चलाओ । अरे, उसको सबकी चिंता है । हमारे गुजारे की चिन्ता क्या उन्हें नहीं होगी ? नया धंधा मिलते ही यह जाल तोड़कर गिरणा में फेंक देंगे । तब तक चलायेंगे यह धंधा । क्या करें ? लेकिन गांधी बाबा को सबकी चिन्ता है । चलो, रात हो जायगी ।"

१५. लेने के बदले दो

मीराबहन इन दिनों हिमालय की तलहटी पर एक गाँव में गोशाला चला रही हैं। गाय-बैलों के मल-मूत्र का कृषि के लिए व्यवस्थित उपयोग करती हैं। जल-सेना के अधिकारी की वह पुत्री है। भारतीय जनता की सेवा में जीवन समर्पित करने के निश्चय से वह भारत आयीं और महात्माजी के जीवन-दर्शन की नि:सीम उपासिका बनीं। साधक वृत्ति की महिला हैं। स्वामी विवेकानन्द की जैसे भगिनी निवेदिता, वैसे महात्मा गांधी की मीराबहन।

सेवाग्राम आने के बाद मीराबहन भिक्षुणी की तरह व्रती बन गयीं। आसपास की पंचकोशी में दवा लेकर घूमती थीं। सेवा उनका धर्म बन गया। मीराबहन अच्छी पढ़ी-लिखों हैं। फ्रेंच अच्छा जानती हैं। महादेवभाई (गांधीजी के सचिव) को फ्रेंच सीखने की इच्छा हुई। थोड़ा समय निकालकर मीराबहन के पास वे फ्रेंच सीखने लगे। आगे चलकर यह बात गांधीजी को मालूम हुई। एक दिन बापू और महादेवभाई बात कर रहे थे, तब महात्माजी ने पूछा :

“महादेव, मैने सुना था कि तुम आजकल फ्रेंच सीख रहे हो ? कौन सिखाता है ?”

“'मीराबहन सिखाती हैं।”

“सीखने के लिए तुमने समय कहाँ से निकाला ? मेरे काम में ढिलाई करते होगे ? और देखो, मीराबहन स्वदेश और स्वगृह छोड़कर इस देश में आयी हैं। उसे तुम हिन्दी सिखाओ। उसके पास से कुछ लेने के बजाय, उसे कुछ नया दो। ठीक है न ?”

“हाँ, बापू” — महादेवभाई ने कहा।

१६. बापू का आशीर्वाद जीवन-परिवर्तनकारी

तब महात्माजी सेवाग्राम आ गये थे । वे रोज सुबह-शाम घूमने जाते थे । एक बार एक धनी मारवाड़ी गांधीजी से मिलने आये । उनके पुत्र का हाल में ही विवाह हुआ था । पुत्र और पुत्र-वधू से बापूजी के चरणों में प्रणाम कराने की उनकी इच्छा थी । उस पिता की बड़ी उत्कण्ठा थी कि वर-वधू को बापूजी का मंगल आशीर्वाद मिले ।

उनसे कहा गया : "आप सुबह आइये । बापू जब घूमने जाते हैं, तब रास्ते में मिलिये। पुत्र और पुत्रवधू को लेते आइये ।"

"रास्ते में निश्चित ही मिलेंगे न ? आप लोग नाराज तो नहीं होंगे ?"

"हम नाराज हों तो भी बापूजी थोड़े ही नाराज होनेवाले हैं? सुबह रास्ते में मिलिये।"

वह श्रद्धालु मारवाड़ी गया और सुबह होने की प्रतीक्षा करता रहा । सब लोग जल्दी उठे । वधु, वर के माता-पिता निकल पड़े । जिस रास्ते से महात्माजी घूमने निकलते थे, उसी रास्ते पर राह देखते सब लोग खड़े थे ।

पक्षी चहचहाने लगे। सृष्टि प्रसन्न थी और उधर से महात्माजी के मुक्त हास्य की शुभ ध्वनि सुनायी दी । आ गये, महात्माजी आ गये । भारत के भाग्यविधाता चले आ रहे थे ।

मारवाड़ी ने कहा : "चरण छुओ । महात्माजी के चरण छुओ ।"

वधू-वर ने उन पवित्र चरणों पर मस्तक रखा । महात्माजी ने प्रेम से उन्हें उठाया । एक क्षण बापू गम्भीर बनकर खड़े रहे । लेकिन क्यों ?

उस वधू के चेहरे पर घूँघट था, पर्दा था । यह गुलामी बापू कैसे सहन कर सकते थे? आँख के रहते अन्धे बनकर रहना ? पवित्रता तो मुक्तता में ही खिलती है । बापूजी ने उस लड़की का घूँघट चेहरे पर से हटाया । उसके श्वशुर से बोले :

“मैंने यह पर्दा हटाया है । इस लड़की के मुखमण्डल को इसी तरह हमेशा खुला रखो । फिर से यह घूँघट चेहरे पर आने न पाये ।”

“जैसी आपकी आज्ञा! आपकी आज्ञा के विरुद्ध हम नहीं हैं । आपका आशीर्वाद चाहिए ।” श्वशुर बोले ।

“जो भला है, उसे प्रभु का आशीर्वाद सदा रहता है ।” इतना कहा और उन वर-वधू के मस्तक पर मंगलमय हाथ रखकर महात्माजी तेजी से आगे बढ़ गये ।

भारत को मुक्त करनेवाला महात्मा भारत के सब लोगों के जीवन में सच्ची आजादी लाना चाहता था । कितने ही लोगों के जीवन में बापूजी ने ऐसी क्रांति लायी होगी ! वह सारा इतिहास संसार को कौन सुनायेगा ? बापू के जैसा क्रांतिकारी दूसरा हुआ नहीं ।

१७. बिना सुँघनी के दाँत उखड़वाया

तब गांधीजी अफ्रीका से लन्दन गये थे । वे दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की बात इंग्लैण्ड के लोगों के सामने रखने के लिए गये थे । वहाँ उन्होंने एक 'दक्षिणी अफ्रीका-समिति' की स्थापना की । बड़े-बड़े लोगों से मिले । अखबारों में लेख लिखे । सभाएँ कीं । दिनभर ही नहीं बल्कि मध्यरात्रि तक काम चलता था ।

वे एक होटल में ठहरे थे । एक दिन 'दक्षिणी अफ्रीका-समिति' की बैठक हो रही थी। इतने में उनके एक मित्र डॉ. जोशिया ओल्डफील्ड उनसे मिलने आये । गांधीजी बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैण्ड गये थे, तब जोशिया और वे एक ही घर में रहते थे । उनमें बड़ा स्नेह था ।

पुराना मित्र मिलने आया, इसलिए गांधीजी बाहर आये । थोड़ी बातचीत के बाद उन्होंने डॉक्टर से पूछा :

"मेरा एक दाँत बहुत दुखता है, उसे आप निकाल देंगे?"

डॉक्टर ओल्डफील्ड ने दाँत देखा । दाँत निकालना कठिन था । बोले : "किसी दंत-चिकित्सक के पास जाना होगा ।"

गांधीजी ने कहा : "मुझे समय नहीं है । यहीं के यहीं चट से निकाल दें तो मैं बड़ा आभारी होऊँगा । देखिये । क्योंकि मेरा सारा ध्यान इस दाँत की ओर जाता है और एकाग्र मन से सोच नहीं सकता हुँ, न काम ही कर पाता हूँ ।"

डॉ. ओल्डफील्ड बाहर गये । दाँत निकालने का औजार कहीं से माँगकर लाये । मसूडे को सुन्न किये बगैर दाँत उखाड़ना बड़ा दुखदायी होता है । गांधीजी ने समिति के लोगों से कुछ देर रुकने के लिए कहा और अपने शयनकक्ष में आये । डॉक्टर दाँत निकालने

लगे । निकालने में बड़ी तकलीफ हुई । परन्तु गांधीजी शांत थे । सारी वेदना चुपचाप सहन की । उफ तक नहीं किया । दाँत निकल गया । कुछ मिनट शांति से बैठे रहे । फिर धीमी आवाज में डॉक्टर को धन्यवाद दिया और अपने काम पर लौट आये ।

१८. एक मंगल प्रसंग

दो मित्र आपस में मिलते हैं, तो कितना आनन्द आता है । लम्बे अरसे के बाद मिलते हैं तो आनन्द सौगुना बढ़ जाता है । दो मित्रों के मिलन में मिठास होती है । क्योंकि उसमें निर्मल प्रेम होता है । परन्तु जब दो महापूरुष एक-दूसरे से मिलते हैं, तब तो उसमें अपूर्व माधुर्य होता है । वह गंगा-यमुना का मिलन है, सूर्य-चन्द्र का मिलन है, हरि-हर का मिलन है । एक बार समर्थ रामदास और सन्त तुकाराम ऐसे ही मिले थे । एक नदी के किनारे इन दो सन्तों के बीच क्या बातचीत होती है, यह देखने के लिए कौतूहल से हजारों लोग एकत्र हुए थे । एक ने पानी में पत्थर फेंक, दूसरे ने आकाश की ओर उँगली उठायी । दोनों निकल गये । इसका अर्थ क्या है ? एक ने कहा : "जैसे पत्थर पानी में डूबता है, वैसे ये लोग संसार में डूब रहे हैं ।" दूसरे ने कहा : "क्या करें ? प्रभु की इच्छा !"

लेकिन आज मैं तुम्हें बापूजी की एक मीठी बात सुनानेवाला हूँ । यरवदा-जेल में महात्माजी ने सन् 1932 में अनशन शुरू किया था । अग्रेजों ने हरिजनों को हिन्दू-समाज से हमेशा के लिए अलग कर देने की योजना बनायी थी । महात्माजी के लिए यह बाग असह्य हो गयी । शरीर का एक अंग काटकर अलग कर देना किसे सह्य होगा ? और हिन्दूसमाज के लिए वह स्थायी कलंकरूप बन गया होता । इसलिए महात्माजी ने उपवास शुरू किया । इंग्लैण्ड के उस समय के बड़े वजीर मैक्डोनाल्ड ने जो फैसला जाहिर किया था, उसे रद्द कराने के लिए वह उपवास था । भागदौड़ शुरू हुई । यरवदा-जेल भारत का राजनैतिक चर्चा-क्षेत्र बना । पं. मदनमोहन मालवीय आये । राजाजी और डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर आये । अन्त में पूना-करार स्वीकृत हुआ, जो अम्बेडकर को मंजूर था । सबको आनंद हुआ।

उपवास-समाप्ति के समय वहाँ कौन-कौन थे ? देशबन्धु दास की पत्नी वासन्तीदेवी आयी थीं । सरोजिनीदेवी थीं । मदनमोहन मालवीय थे । और थे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ । वे

महात्माजी के पास आये। आम्रवृक्ष के नीचे महात्माजी की खटिया थी। राष्ट्रपिता लेटा हुआ था। उपवास समाप्त होने को था। रवीन्द्रनाथ महात्माजी के पास गये।

महाकवि भावना-विभोर हो गये। वे झुके और महात्माजी के वक्षःस्थल पर सिर रखकर वह महान् कवीन्द्र, गुरुदेव नन्हें बच्चे की तरह रो पड़े! वह दृश्य आँखों के सामने आते ही मैं कई बार गद्गद हो उठा हूँ! भारत का सारा सत्य, शिव, सुन्दर उस समय यरवदा में इकट्ठा हुआ था। महान् प्रसंग! उस पवित्र को प्रणाम।

१९. नसीहत देनेवाले बापू

एक बार बंगाल के सफर में गांधीजी एक जमींदार के घर ठहरे थे । यह जमींदार अपनी आदत के अनुसार हर काम के लिए नौकरों का उपयोग करता था । नौकरों की सारी भागदौड़ इस जमींदार का काम करने के लिए थी ।

एक दिन बँगले के बरामदे में सदा की भाँति गांधीजी प्रार्थना के लिए उच्च आसन पर बैठे । उनकी प्रार्थना और बाद का प्रवचन सुनने के लिए बहुत सारे लोग सामने बैठे थे । उन दिनों गांधीजी बत्ती बुझाकर प्रार्थना किया करते थे । प्रार्थना के समय जमींदार गांधीजी के पास आकर बैठा । प्रार्थना शुरू होने से पहले गांधीजी ने जमींदार को बत्ती बुझा देने को कहा । बत्ती का बटन जमींदार के सिर पर ही था । परन्तु अपनी आदत के अनुसार उन्होंने नौकर को बुलाया ।

इतने में चमत्कार हुआ । बत्तियाँ एकाएक बुझ गयीं और अँधेरे में प्रार्थना का आरम्भ हुआ । गांधीजी ने स्वयं उठकर चट से बटन दबा दिया था ।

प्रार्थना के बाद प्रश्नोत्तर के समय गांधीजी ने प्रसंगवशात् कहा : “आजकल के पढ़े-लिखे और धनी लोगों को शरीर-श्रम करने में लज्जा आती है, उसे वे हीन काम मानते हैं, लेकिन यह गलत है । गीता में तो कहा है कि जो शरीर-श्रम न करके खाता है, वह चोर है।”

जमींदार को अपनी भूल मालूम हुई । उस पर किया गया व्यंग्य वह भाँप गया और बाद में....

बाद में एक मजेदार बात हुई । भीड़ के कारण पास की एक टेबल लुढ़क गयी और उस पर रखा चीनी मिट्टी का गमला नीचे गिरकर चूर-चूर हो गया । फौरन जमींदार उच्च आसन से कूद पड़ा और फूटे गमले के टुकड़े समेटने लगा ।

थोड़ी ही देर में उन टुकड़ों को बटोरने के लिए नौकर दौड़ आये परन्तु मालिक ही घुटने के बल बैठकर टुकडे बटोर रहा था ।

यह दृश्य गांधीजी ने देखा । परन्तु उनके शब्दों ने तो अनजाने ही अपना काम कर दिया था ।

बापूजी का दैनिक जीवन नसीहतों से भरा हुआ था ।

उनके जीवन का प्रत्येक क्षण संसार को सन्देश देता था ।

२०. इंग्लैण्ड आने के लिए तीन शर्तें

गांधीजी सन् 1931 में लन्दन गये थे, तब मिस म्युरियल लिस्टर की गरीब बस्ती में ठहरे थे। म्युरियल बहन उससे पहले एक बार भारत आयी थीं। तब बापू साबरमती-आश्रम में रहते थे।

बहन ने कहा: "आप इंग्लैण्ड आइये न!"

"किसलिए आऊँ? आप लोगों को सिखाने लायक मेरे पास अभी कुछ नहीं है। हमारा सत्याग्रह का प्रयोग सफल होने दीजिये। फिर देखा जायगा।"

"बापू, मेरा मतलब यह नहीं था कि आप हमें सिखाने आइये।"

"फिर क्यों आऊँ?"

"हमसे सीखने आइये।"

गांधीजी के चेहरे पर खुशी खिल उठी। बोले: "सच, वहाँ कइयों से मिलना होगा। जॉर्ज डेविस वगैरह के अनुभव जानने को मिलेंगे। आना तो चाहिए। मैं आऊँगा।"

"अब्छी बात है। कब आयेंगे?"

"मेरी शर्त कबूल कीजिये।"

"बताइये तो सही।"

"मैंचेस्टर के मिल-मालिकों से कहिये कि यहाँ वे कपड़ा न भेजें। पार्लियामेंट के सदस्यों और मन्त्रिमण्डल से कहिये कि भारत को स्वराज्य दे दिया जाय। तीसरी बात यह कि ब्रिटिश सत्ता के कारण हमारे यहाँ जहाँ-तहाँ शराब फैल रही है। शराब की आमदनी से यहाँ शिक्षण दिया जाता है। यह पाप है। अफीम का भी व्यापार भारत में इन्होंने चला

रखा है । अफीम तो बुरी है ही, शराब उससे भी बुरी है । अफीम तो खानेवाले को ही नुकसान पहुँचाती है, शराब सारे घर को उजाड़ती है । स्त्रियों पर जो बीतती है, वह पूछो ही मत ! इसलिए वहाँ जाकर यह प्रचार कीजिये कि भारत में शरीब और अफीम बन्द होनी चाहिए । आप ये तीन काम कीजिये । फिर मैं एक करोड़ भारतीयों के हस्ताक्षर लेकर, अपने खर्च से विलायत आऊँगा और कहूँगा कि भारत के विचार को मान्य करो ।"

"जो भी कर सकूँगी, मै करूँगी ।" — म्युरियल बहन ने कहा । बापू के देहावसान के बाद वह बहन भारत आयी थीं । सेवाग्राम में गांधीजी की कुटिया में खड़ी रहीं । बोलीं:"बापू के बिना बापू की कुटी ।" उनकी आँखें भर आयीं । फिर बोलीं: "यहाँ छोटे बच्चों को आर्यनायकम् और आशादेवी पढ़ाते हैं । बापू की आत्मा यहाँ सर्वत्र है।"

२१. अमरीकी पत्रकारों को मौन का पाठ

सन् 1931 में गांधीजी जब इग्लैण्ड में थे, तब अमरीकी संवाददाताओं ने गांधीजी को एक दिन भोजन और भाषण के लिए आमंत्रित किया । गांधीजी ने आमन्त्रण स्वीकार कर लिया । मीराबहन साथ थीं । गांधीजी के लिए शुद्ध शाकाहार का प्रबन्ध था । गांधीजी बोलने के लिए खड़े हुए । बोले : "संवाददाताओं को संयम सीखना जरूरी है । मैं आपसे जो भी कहूँगा, वह न निजी बात है, न नयी । परन्तु मैं आपको संयम सिखाना चाहता हूँ । आज के दिन आप लोग मौन रखें । यानी मैं यहाँ जो भी बोलूँगा, उसे लिखकर कहीं न भेजें ।"

सारे संवाददाता लिख लेने के इरादे से जमा हुए थे । सब विभिन्न पत्रों में भाषण की रिपोर्ट प्रकाशित कराने के लिए कलम खोलकर तैयार थे । परन्तू गांधीजी के निवेदन को उन लोगों ने मान लिया । और उन अमरीकी संवाददाताओं ने न तो कुछ नोट लिया, न ही कुछ प्रकाशित किया ।

२२. सम्राट से भेंट !

बापू उस समय लन्दन में थे । वे वहाँ दरिद्रनारायण के प्रतिनिधि के नाते गये थे । ब्रिटिश सरकार के निमन्त्रण से गये थे । वे अपने को ब्रिटिशों का मेहमान मानते थे ।

बकिंघम पैलेस से राजा और रानी से मिलने के लिए निमंत्रण आया । बापू के सामने प्रश्न खड़ा हुआ कि जायँ या नहीं । उधर हिन्दुस्तान की जनता पर सरकार ने हथियार तान रखे हैं । मैं क्या इधर सम्राट का निमन्त्रण स्वीकार करता रहूँ । परन्तु मैं ब्रिटिशों का अतिथि हूँ । मैं व्यक्तिगत तौर पर आया होता तो सम्राट् के निमंत्रण को ठुकरा सकता था । परन्तु आज तो मैं उनके अतिथि के रूप में हूँ । मुझे जाना चाहिए । अन्त में बापू ने जाने का निर्णय किया । लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों से कहा :

“मैं अपनी पोशाक नहीं बदलूँगा । मैं अपनी नित्य की पोशाक में ही आऊँगा । हर्ज न हो तो बताइये ।”

उत्तर मिला कि कोई हर्ज नही है । ब्रिटिश-सम्राट से मिलने के लिए भारतीय जनता का हृदय-सम्राट घुटने तक का कच्छ पहनकर गया ।

साम्राज्य का अभिमानी चर्चिल इससे लाल-पीला हो गया था । परन्तु उस कच्छ के अपार वैभव की महिमा चर्चिल भला क्या जाने ?

२३. भारत का बादशाह

गांधीजी यरवदा में थे । किसी विदेशी ने गांधीजी को एक प्रत्र लिखा था । पता नहीं, वह विदेशी उम्र से छोटा था या बड़ा । शायदा वह बालक रहा होगा । अन्यथा ऐसी निर्मलता कैसे आती ?

उस पत्र में क्या था, कौन जानता है ? आज वह पत्र कहीं है भी या नहीं, मालूम नहीं । परन्तु दिल्ली के राजघाट पर जो प्रदर्शनी हुई, उसमें उस पत्र का लिफाफा रखा था । उस लिफाफे पर का निम्न पता पढ़ो और गद्गद होओ :

To

The King of India;

Delhi. (India)

[भारत के बादशाह को, दिल्ली । (भारत)]

यह पता उस पत्र पर था । अन्दर जो बातें लिखी थीं, उन पर से मालूम हुआ कि पत्र गांधीजी को लिखा गया था, इसलिए वह पत्र आखिर यरवदा पहुँचा । भारत का बादशाह ब्रिटिशों की जेल में था । भारतीय जनता का सच्चा सम्राट इंग्लैण्ड में नहीं था । पत्र भेजनेवाले उस अज्ञात व्यक्ति को लगा कि भारत के सम्राट महात्माजी हैं । कितना बड़ा सत्य है ! दूसरे राजा आयेंगे, जायेंगे । परन्तु इस राजा का सिंहासन तो भारतीयों के ही नहीं, संसार के सब लोगों के हृदय में सनातन काल तक स्थिर रहेगा । क्योंकि सत्य और प्रेम की बुनियाद पर वह सिंहासन स्थित है ।

२४. बच्चे और बापू

बापू को छोटे बच्चों से बड़ा प्यार था । और बच्चों को भी बापू से विशेष प्रेम था । सेवाग्राम में बापूजी के नाती रहते थे । वे बापू को खूब तंग करते थे ।

एक नन्हा नाती डेढ़ वर्ष का था । वह गांधीजी के आगे खड़ा रहता और लगातार 'बापूजी' 'बापूजी' चिल्लाया करता । गांधीजी न ध्यान देते, न जवाब । आसपास के सारे लोग विनोद देखकर हँसने लगते ।

गांधीजी सन् 1944 में जेल से छूटकर शान्तिनिकेतन गये थे । जवाहरलालजी की पुत्री इंदिरा वहीं थी । राजीव उसका छोटा पुत्र था । गांधीजी को देखते ही राजीव बोल पड़ा : "जय हिन्द, बापू !" बापू का दिल प्यार से भर आया और बोले : "जय हिन्द, राजीव !"

एक बार सेवाग्राम में गांधीजी घूमने निकले । घूमते समय भी मुलाकातें होती थीं । चर्चा थी कि गांधीजी दिल्ली जानेवाले हैं । साथ में जो नाती था, उसने पूछा : बापूजी, आप दिल्ली जानेवाले हैं, हैं न ?"

"हाँ बेटे ।"

"किसलिए जायेंगे ?"

"वाइसराय से मिलने ।"

"हमेशा आप ही उनसे मिलने जाते हैं । वाइसराय आपसे मिलने क्यों नहीं आते !"

यह प्रश्न सुनकर सब हँस पड़े । बापूजी ने उस नाती की पीठ कर प्यार से मुक्का जमा दिया ।

बापू तब पंचगनी में थे । दादर के मोतीवाले लागू जो अपने बच्चे के साथ तब पंचगनी थे । एक बार गांधीजी घूमने निकले । लागूजी का बच्चा भी साथ था । गांधीजी की छड़ी उसने हाथ में ली । एक सिरा उसके हाथ में, दूसरा गांधीजी के हाथ में । बच्चा भागने लगा । बापू भी भागने लगे । उस वक्त का चित्र अजर-अमर है । उस चित्र के नीचे यह लिखा हुआ तुमने देखा होगा : "नेता को ले चलनेवाला बालक "।

गांधीजी जुहू में थे। सन् 1944 के बाद की बात है । प्रार्थना जुहू में होती थी । बम्बई से हजारों लोग प्रार्थना में जाते थे । एक दिन एक लड़का दादर से पैदल चला । फल-फूल लेकर जुहू पहुँचा । बापूजी से मिला । उनके चरणों में फूल चढ़ाये, फल सामने रखे । राष्ट्रपिता ने उसे पास में बैठाया, उसे आशीर्वाद दिया । बापूजी का परम मंगल हाथ पीठ सहलाये, इससे अधिक महान् भाग्य क्या हो सकता है ।

२५. नमक-सत्याग्रह

सन् 1930 में महात्माजी सत्याग्रह शुरू करनेवाले थे । अभी यह निश्चित नहीं हुआ था कि कौन-सा सत्याग्रह करनेवाले हैं । रवीन्द्रनाथ ठाकुर सन् 1930 के प्रारम्भ में साबरमती-आश्रम आये हुए थे ।

उन्होंने पूछा : "महात्माजी, सत्याग्रह का स्वरूप क्या रहेगा ?"

"मैं दिन-रात सोच रहा हूँ । अभी प्रकाश नहीं मिला है" बापू बोले । आगे चलकर बापूजी को नमक दिखाई दिया । दादाभाई नौरोजी ने 50 वर्ष पूर्व लिख रखा था कि नमक के बारे में जो अन्याय हो रहा है, वह जिस दिन जनता के ध्यान में आयेगा, उसी दिन वह विद्रोह कर उठेगी । नमक तैयार करने में जो खर्च आता है, उससे सैकडोंगुना अधिक उस पर सरकारी कर लगा है । बंगाल के बाजार में विलायती नमक बिकता है । मद्रास के इलाके में जो नमक के आगार थे, वे सब नष्ट हो गये । मद्रास-राज्य में तो गरीबी अत्यधिक है । समुन्दर के किनारे पर बसे लोगों के पास नमक खरीदने के लिए भी पैसा नहीं है । लेकिन पेट में नमक न जाय तो कैसे चलेगा ? जानवरों की खुराक में भी हम नमक मिलाते हैं । मद्रास के पास हमारे गरीब भाई रात के समय समुद्र तट पर जाते हैं ओर वहाँ की जमीन चाटते हैं, ताकि पेट में कुछ तो नमक का अंश पहुँचे । समुद्र-तट पर अपने-आप बननेवाले नमक की मिट्टी में मिलाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कर्मचारी तैनात कर रखे थे । नमक में या खाद्य पदार्थ में मिट्टी मिलाना कितना बड़ा पाप है !

ऐसे नमक की ओर राष्ट्रपिता का ध्यान गया। 'नमक का सत्याग्रह' शब्द भारत भर में फैला । सत्याग्रह का यह नया शब्द, कानून भंग का शब्द रसोई-घर तक पहुँचा । माँ-बहनें भी सत्याग्रह करने निकल पड़ीं ।

सन् 1930 की वह अपूर्व लड़ाई ! नमक का सत्याग्रह, जंगल का सत्याग्रह, करबन्दी — इस तरह लड़ाई का स्वरूप व्यापक होता गया । परन्तु सबमें चार चाँद लगा दिये वानर-सेना ने । भारत भर के बच्चे-बच्चियाँ राष्ट्रीय संग्राम में शामिल हुईं । सुबह-शाम राष्ट्रीय गीत गाते हुए भारत भर में बालक-बालिकाओं की सेनाएँ घूमने लगीं । जैसे राम के वानर थे, शिवाजी के मावले थे, वैसे बापूजी के ये बालक थे । सारे राष्ट्र को इन तेजस्वी बालकों ने देश-भक्ति की दीक्षा दी ! छोटे बालकों ने लाठियाँ सहीं । कल्याण में आठ साल की एक बच्ची लाठी की मार से बेहोश होकर गिर पड़ी ।

बापू जेल से छूटे । सत्याग्रह रुका । वे गद्गद होकर बोले : "ईश्वर पर भरोसा रखकर मैंने आन्दोलन शुरू किया था । परन्तु छोटे बच्चे यों उठेंगे, देशभर में वानर-सेनाएँ खड़ी होंगी, इस बात की मुझे कल्पना भी नहीं थी । छोटे बच्चों की निष्पाप साधना में असीम सामर्थ्य होती है ! प्रभु की कृपा है ! उसी के हाथ में यह आन्दोलन था । उसने ही सबको प्रेरणा दी ।"

२६. स्त्रीत्व रक्षा के प्रहरी

दूसरा विश्व-युद्ध शुरू हो गया था । यूरोप के राष्ट्र एक के बाद एक गिरते जा रहे थे। इंग्लैण्ड संकट में था । वह देखो, उपनिवेशों से फौजें आने लगीं । इंग्लैण्ड में उतरने लगीं । एक आस्ट्रेलियन सेना बंबई मं उतरी । उसे विलायत जाना है ।

लड़ाई के मैदान में मरने के लिए जानेवाले सैनिकों को हर तरह की छूट रहती है । फिर गुलाम भारत में गोरे सिपाहियों के मिजाज चढ़े हुए हों, तो क्या आश्चर्य ! उन आस्ट्रेलियन गोरे टामियों ने बम्बई में उपद्रव कर दिया । किसी की टमटम पर चढ़ जाते, किसी की मोटर थाम लेते । परन्तु सबसे बुरी बात तो महिलाओं के साथ उनके व्यहार की थी । गिरगाँव, ग्रँट रोड वगैरह भागों में भारतीय नारियों का घूमना-फिरना मुहाल होने लगा । टामी छेड़छाड़ करते थे । सुना है, आँचल भी पकड़कर खींचते थे । परन्तु बम्बई के अखबार चुप थे । महाराष्ट्र के हिन्दुत्व के अभिमानी समाचारपत्र भी ठण्डे पड़े थे ।

आखिर राष्ट्रपिता के कान तक बात पहुँची । वह शांत सिंह प्रक्षुब्ध हो उठा । हरिजन में बापूजी ने लिखा : “सैनिक अधिकारी कहाँ हैं ? गवर्नर क्या कर रहे हैं ? बम्बई के मेयर किधर गये ? हिंसा-अहिंसा का यह सवाल नहीं है । स्त्रियों की आबरू का रक्षण होना ही चाहिए ।” ज्यों ही महात्माजी ने अपनी निर्भय आवाज बुलन्द की, त्यों ही दूसरे अखबारों की लेखनी खुली ।

महात्माजी यानी मूर्तिमन्त निर्भयता !

२७. गांधीजी और लोकमान्य तिलक

लोकमान्य तिलक के प्रति महात्माजी के मन में बड़ा आदर था । परन्तु उन्हें भी नम्रतापूर्वक, लेकिन निर्भय होकर सुनाने से महात्माजी कभी हिचकिचाते नहीं थे ।

सन् 1917 की बात है । कलकत्ता में काग्रेस का अधिवेशन था । डॉ. एनी बेसेण्ट उस वर्ष कांग्रेस की अध्यक्षा थीं । अधिवेशन के निमित्त से दूसरी भी सार्वजनिक सभाएँ होती थीं, नेताओं के भाषण होते थे ।

वह देखो, एक विराट् सभा हो रही है । हजारों लोग इकट्ठा हुए हैं । वहाँ लोकमान्य तिलक, गांधीजी आदि महापुरुष बैठे हैं । लोकमान्य का भाषण हुआ । वे अंगेजी में बोले । उनके बाद गांधीजी उठकर बोले : “लोकमान्य का सुन्दर, स्फूर्तिदायक भाषण हिन्दी में हुआ होता तो अधिकांश लोग समझ पाते । यह अंग्रेजी भाषण बहुत ही कम लोग समझ सके होंगे । भाषण जिनकी समझ में न आया हो, वे हाथ ऊपर उठायें ।”

हजारों हाथ उठे । गांधीजी ने लोकमान्य से कहा : “भाषण जनता की समझ में आना चाहिए न !”

लोकमान्य फिर से भाषण के लिए खड़े हुए । जनता उनकी भी भगवान् थी । लोकमान्य को हिन्दी में बोलने का अभ्यास नहीं था । फिर भी टूटी-फूटी हिन्दी में वे बोले । लोगों के चेहरे खिल उठे । महात्माजी को अपार आनन्द हुआ । सही अर्थ में राष्ट्रपिता और राष्ट्रैक्य का उदय हो रहा था ।

२८. इच्छा शक्ति का वह चमत्कार !

आज एक करुण और गंभीर संस्मरण सुना रहा हूँ। सन् 1943 के दिन थे। उन दिनों को कौन भूल सकता है? 'भारत छोड़ो' - आन्दोलन का जोर कम हो गया था। जयप्रकाशजी जेल से भागकर फिर से संगठन मजबूत बनाने में लगे थे। आजाद दस्ते जगह-जगह कायम कर रहे थे। इतने में आगाखाँ महल में गांधीजी का उपवास प्रारम्भ हुआ। सबके मुँह सूख गये। लार्ड लिनलिथगो राष्ट्रपिता को छोड़ने को तैयार नहीं थे। "उधर चर्चिल जैसा जिद्दी साम्राज्यवादी व्यक्ति प्रधानमन्त्री था। गांधीजी की उसको क्या कद्र थी? बम्बई से कुछ व्यक्ति गांधीजी से मिलने जा सकते थे। उनके द्वारा कुछ समाचार मिल जाता था।

गांधीजी का स्वास्थ्य उस दिन चिन्ताजनक था। नाड़ी ठीक नहीं चल रही थी। डॉक्टर असहाय-से हो गये थे। कहते हैं कि उन्होंने सरकार को बता दिया था कि हम इस महापुरुष को जबरदस्ती नली से अन्न कभी नहीं देंगे, ऐसी विडम्बना वे नहीं करेंगे। लेकिन कहीं गांधीजी का देहान्त हो जाय तो ? सरकार ने निश्चय कर रखा था कि तीन दिन तक इस समाचार का देश को पता नहीं लगने दिया जायगा। खास-खास जगहों पर सेना तैनात कर दी गयी थी। यह भी सुना था कि जरूरत पड़ने पर चन्दन की लकड़ी भी सरकार ने तैयार रखी थी।

उस दिन बम्बई में जयप्रकाशजी, अच्युतराव आदि कुछ साथी चिंता कर रहे थे। कार्यकर्ता सोच रहे थे कि भले सरकार यह समाचार दबाने की कोशिश करे, लेकिन लाखों की तादाद में पर्चे छापकर जनता को वे जरूर जानकारी करा देंगे। कब क्या समाचार आये, क्या ठिकाना ?

"जयप्रकाश, आप पर्चा लिखिये। सभी भाषाओं में उसका अनुवाद कराना होगा। इस समय आँसू पोंछ लिजिये और लिखिये" - अच्युतराव ने कहा। साथी गद्गद हो रहे थे।

गांधीजी अपने बीच में से उठ गये हैं, यह कल्पना करके लिखना था । हम चालीस करोड़ लोग होते हुए उन्हें जेल से छुड़ा नहीं सके ! कितनी शर्मनाक बात है । जयप्रकाशजी ने लिखने के लिए कलम-कागज उठाया । एक शब्द लिखते थे तो आँसू की बूँद से वह मिट जाता था । इस प्रकार आँसूओं से भींगा हुआ पत्रक तैयार हुआ । उसका मराठी में अनुवाद करने के लिए एक प्रति मेरे पास आयी ।

इतने में समाचार आया कि नाड़ी ठीक हो गयी । संकट टला, राष्ट्रपिता अब नहीं जायगा । महात्मा की संकल्प-शक्ति की तो वह विजय नहीं ? वह एक चमत्कार ही था । स्वराज्य अपनी आँख से देखे बिना महापुरुष जाता कैसे ? उस रात का स्मरण होता है, तो आज भी हृदय अनेक स्मृतियों से भर आता है ।

खण्ड 3:
कर्म-योगी

२९. हर एक काम भगवान् की पूजा

साबरमती का आश्रम अभी-अभी शुरू हुआ था । दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का सफल प्रयोग करके गांधीजी स्वेदश लौटे थे । गुरु ना. गोखले की सलाह के अनुसार सारा भारत घूमकर वे साबरमती के किनारे आश्रम करके साधना कर रहे थे । महात्माजी कभी-कभी अहमदाबाद के बाररूम में भी जाते और चर्चा किया करते थे । सरदार वल्लभभाई ताश खेलते बैठते । गांधीजी की ओर कोई खास ध्यान नहीं देता था । परन्तु धीरे-धीरे कुछ वकीलों में कुतूहल पैदा होने लगा । गांधीजी के पास कुछ काम माँगने की उनकी इच्छा होने लगी ।

एक दिन आश्रम में गांधीजी अपने साथियों के साथ काम कर रहे थे । पूरा स्वावलम्बन था । महात्माजी और विनोबाजी साथ-साथ एक ही चक्की पर बैठकर पीसते थे । कितना महान् अनुभव ! लेकिन आज पिसाई नहीं, अनाज-सफाई चल रही थी । पहले सफाई, फिर पिसाई । गांधीजी, विनोबाजी और अन्य सभी अनाज साफ करने बैठे थे ।

इतने में कुछ वकील लोग आये । उनके बैठने के लिए खजूर की चटाई बिंछायी गयी ।

“बैठिये” – गाँधीजी बोले ।

“हम बैठने नहीं आये । हमें कुछ काम दीजिये । आपका कुछ-न-कुछ काम करने के विचार से हम आये हैं ।”

“ठीक है । खुशी के बात है ।” — इतना कहकर दो-तीन थालियों में अनाज लेकर उन वकीलों के आगे रख दिया ।

“यह अनाज साफ कीजिये । ठीक से साफ कीजिये ।”

“हम क्या यह ज्वार-बाजरा साफ करते बैठेंगे ?”

“जी हाँ । इस समय यही काम है ।”

क्या करते बेचारे ? वे सफेदपोश वकील अनाज साफ करते बैठे । कुछ देर बाद नमस्कार करके चले गये । फिर कभी काम माँगने नहीं आये । गांधीजी की दृष्टि में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना, अस्पृश्यता निवारण के लिए उपवास करना जितना महत्व का काम था, उतना ही महत्व का काम दाल-चावल बीनना भी था । उन्होंने ऐसा कभी नहीं कहा कि यह तो औरतों का तुच्छ काम है । सेवा का प्रत्येक कर्म पवित्र है । हरएक कर्म में अपनी आत्मा उँड़ेल दो । वह कर्म ठीक से करना यही परमेश्वर की पूजा है, यही मोक्ष है ।

३०. गांधी का अनोखा व्यायाम

संसार के सभी महापुरुष सादगी से रहते आये हैं। उन्हें कोई भी छोटा काम करने में संकोच नहीं होता था। भगवान् कृष्ण गायें चराते, घोड़े हाँकते, जूठन उठाते थे। पैगम्बर मुहम्मद ऊँट चराते थे, अपना कपड़ा स्वयं सीते थे, गोशाला जाकर दूध दुहते थे, मस्जिद में झाड़ू लगाते थे। महात्मा पुरुष सेवा के किसी काम को छोटा नहीं समझते थे। वे खेलते भी थे। गोपालकृष्ण ग्वालों के साथ खेलते थे। कृष्ण भगवान् ने खेलों को एक दिव्यता प्रदान की। उनका 'पेंद्या' लँगोटिया मित्र अमर हो गया। मुहम्मद पैगम्बर भी बच्चों के साथ रमते थे, खेलते थे, उनको किस्से-कहानियाँ सुनाते थे। ईसामसीह को भी बच्चों से प्यार था।

महात्माजी को भी बच्चों से बेहद प्यार था। उन दिनों वे दक्षिण अफ्रीका में रहते थे। रहन-सहन सादा था। सब कुछ स्वावलम्बन से चलता था। सुबह छह बजे ही उठकर सब पीसने में लग जाते। दिनभर का आटा पुरुष पीस देते थे। पिसाई दस-पन्द्रह मिनट चलती थी, उतना पर्याप्त हो जाता था। पीसते समय हँसी-मजाक चलता था। चक्की चलाने में व्यायाम के साथ आनन्द भी मिलता था। चक्की की आवाज में हँसने की आवाज मिल जाती थी। बड़ा मजा आता था। पानी भरना, झाड़ू लगाना, पाखाना साफ करना, बर्तन मलना—सभी काम घर में हो होता था। शरीर को व्यायाम होता और काम भी अच्छा होता था।

एक मजे की बात सुनाता हूँ। सब जानते ही हैं कि महात्माजी टहलने का व्यायाम रोज करते थे। जानते हो, मैं कौन-सा किस्सा सुनानेवाला हूँ? महात्माजी पीसने लगते थे, पाखाना साफ करते थे, परन्तु एक निराला ही व्यायाम भी करते थे, वह बड़ा मजेदार था। बूझो तो! क्या दण्ड-बैठक लगाते थे? नहीं। आसन करते थे? नहीं। तो फिर कौन सा

व्यायाम करते होंगे ? समझे कुछ ? महात्माजी डोरी पर से छलाँग मारने में बड़े माहिर थे । सुबह-सुबह हाथ में रस्सी लेकर कूदना शुरू करते । वैसे आश्रम में हँसी सुनाई नहीं देती थी, लेकिन पीसते समय और रस्सी पर की उड़ानें भरते समय हँसी फूट पड़ती थी । बड़ा मजा आता था । संसार को अहिंसा का संन्देश देनेवाला, भारत को आजादी दिलानेवाला यह महात्मा और राष्ट्रपिता दक्षिण अफ्रीका में सुबह हाथ में रस्सी लेकर कूदा करता था । कोई चित्रकार महात्माजी का यह चित्र बनायेगा तो कितना अच्छा रहेगा ? गोपालकृष्ण गोकुल में लगोरी खेलता था । महात्माजी रस्सी पर से उड़ान भरते थे ।

३१. गांधीजी की कर्म-पूजा : कताई

सन् 1931 के दिन थे । सन्, 1930 का महान सत्याग्रह स्थगित हो चुका था । पं. मोतीलाल नेहरू हाल में ही निजधाम सिधारे थे । जवाहरलालजी को ढाढ़स बँधाकर गांधीजी दिल्ली लौट आये थे । सारे राष्ट्र का भार उनके सिर पर था । उन्हें शोक करते बैठने को समय नहीं था ।

आजादी की लड़ाई से राष्ट्र नये तेज से चमक रहा था । परन्तु वार्ता अभी होने को थी । अन्तिम शर्तें तय करना बाकी था । विदेशी माल की दूकानों पर पिकेटिंग का हक, समुद्र के पानी से बना नमक इकट्ठा करने या अपने उपयोग के लिए बना लेने का हक और इसी तरह अन्य कुछ प्रश्नों पर वाइसराय इर्विन और गांधीजी के बीच बातचीत हो रही थी । दूसरी भी काली छायाएँ मँडरा रही थीं । सरदार भगतसिंह और उनके बहादुर साथियों को फाँसी की सजा सुनायी गयी थी । उनके बारे में भी गांधीजी यथासंभव प्रयत्न कर रहे थे । सारे राष्ट्र का कारोबार उन्हें सँभालना था ।

उन दिनों महात्माजी को 7-8 घंटे काम करना पड़ता था । एक दिन 22 घण्टे काम करना पड़ा । वाइसराय के साथ रात के 12 बजे तक बातचीत होती थी । एक दिन रात बारह बजे के बाद गांधीजी घर लौटे । दो बजने को आये । वह राष्ट्रपिता क्या घर जाकर सोया होगा ? थका हुआ वह शरीर क्या बिस्तर पर पड़ा होगा ? नहीं । घर आकर वे चरखा ले बैठे । क्योंकि रोज की कताई बाकी थी । कातना तो उनके लिए कर्म-पूजा थी । चरखे को वे ईश्वर कहते थे । क्योंकि चरखा गरीब को रोटी देता है । चरखे का धागा उनको दरिद्रनारायण से जोड़ता था, गरीबों के श्रमजीवन से जोड़ता था । रात को थके-माँदे लौटने पर भी, दो बजे चरखा चलाते बैठनेवाले बापू की मूर्ति आँखों के सामने आती है, तो हाथ नमस्कार के लिए जुड़ जाते हैं ।

३२. मिताहारी बापू

मद्रास प्रान्त में हरिजन-यात्रा चल रही थी । एक स्टेशन के पास भोजन की व्यवस्था की गयी थी । बापू ने सोचा कि यहाँ बकरी का दूध वगैरह कहाँ मिलेगा ? परन्तु उन्होंने पूछा नहीं । भोजन का समय हुआ । उधर जयघोष हो रहा था । इधर बापू थाली पर बैठे थे । मीराबहन बैठीं । दूसरे लोग भी बैठे । बापूजी का खाना समाप्त होने को आया । मीराबहन सिर्फ गोभी की उबली सब्जी खाती थीं । बापू उठने को ही थे कि मेजवान महिला आयीं और बोलीं :

"महात्माजी, ठहरिये । यह बकरी का दूध लायी हूँ ।"

"बकरी का ?"

"जी, हाँ । चार दिन से खास इसीलिए एक बकरी लायी हूँ । उसे बढ़िया चारा खिलाया है, गाजर आदि । ताकि मीठा दूध मिले । यह दूध सात तह कपड़े से छाना है । भाप में गरम किया है । लीजिये।"

"लेकिन मेरा पेट भर गया है ।"

"ऐसा न कहिये ।"

"मीरबहन को दीजिये ।"

"बापू, मेरा भी पेट भरा है ।"

गांधीजी ने मीराबहन को इशारा किया । उनकी निगाहों में यह भाव था कि इस महिला को कितना बुरा लगेगा ।

मीराबहन ने कहा : "ठीक है, लाइये ।"

"लीजिये । आप ही पीजिये । वह महात्माजी को पहुँच जायगा । आप सब एक ही हैं।"

मीराबहन ने प्याला खाली कर दिया । मन्द-मन्द मुस्कराती हुई बोलीं : "बापू, सचमुच अमृत जैसा है दूध ।"

"तुम्हारे नसीब में था, मेरे नहीं ।" बापू जोर से हँसते हुए बोले । सबको आनन्द हुआ।

३३. प्रयत्नशील बापू

गांधीजी से जो गुण सीखने जैसे हैं, उनमें से एक है उनकी काटकसर (मितव्ययिता)। गांधीजी अपने नित्य जीवन में इसका बड़ा ध्यान रखते थे कि कोई भी चीज जरूरत से ज्यादा काम में न ली जाय । वैसा करना वे गुनाह मानते थे और चोरी करने जैसा समझते थे । हमें जितने की आवश्यकता है, उससे अधिक किसी भी वस्तु का उपयोग करने का अर्थ है, दूसरे को उसका उपयोग करने से वंचित रखना, इसी का नाम है चोरी ।

गांधीजी सेवाग्राम में थे, तब की बात है । उनके आश्रम में अनेक अतिथि आते थे — कोई मिलने आता, कोई बात करने आता, कोई चर्चा करने आता । गांधीजी को कुछ लिखकर देना होता या किसी के पास कोई चिट भेजनी होती तो उसके लिए उन्हें छोटी-छोटी कागज की परचियों की जरूरत पड़ती । तब वे कोरा कागज न लेकर उपयोग किये हुए कागजों के टुकड़े काम में लेते थे ।

सरकारी पत्रक आते थे। उनके चारों ओर किनारे परा भरपूर जगह खाली छूटी रहती थी । बाजू के पास कोरे कागज की पटटी काटकर गांधीजी उनका उपयोग कर लेते थे ।

एक बार आश्रमवासी लोग इकट्ठा बैठे थे । गांधीजी ने सामने पड़ी हुई कैंची उठायी और कागज के कोरे हिस्से की पट्टी काटना शुरू किया । उन्हें ठीक से जम नहीं रहा था । पास में बैठे एक आश्रमवासी ने कहा : “बापू, कैंची मुझे दीजिए । आप ठीक से नहीं काट सकेंगे । मुझे आदत है ।”

गांधीजी बोले : “नहीं काट सकूँगा तो क्या हुआ ? कोशिश करना तो मेरे हाथ में है।” इतना कहकर गांधीजी ने काटने का अपना काम जारी रखा । लाख कोशिश करने पर भी उनसे वह ठीक नहीं कट रहा था । परन्तु उन्होंने कैसे-वैसे वह काम पूरा करके ही छोड़ा।

काम ठीक नहीं बना, फिर भी पूरा तो हुआ ही ।

बापूजी कुछ बातों में बड़े जिद्दी थे । कोई कहे कि फलानी चीज मैं नहीं कर सकता, यह उनको बिल्कुल पसंद न था । वे मानते थे कि हर काम उत्तम रीति से करने का प्रयत्न प्रामाणिकता के साथ करना हरएक का कर्तव्य है ।

३४. सफाई श्रेष्ठ कार्य

दिल्ली की बात है। गांधीजी बिरला-भवन में ठहरे थे । वे स्नानघर में गये । थोड़ी ही देर पहले सेठ बिरला स्नान करके गये थे। उनकी भींगी धोती वहीं पड़ी थी । बापूजी ने वह धोती साफ धो दी । फिर नहाकर अपना अँगोछा सूखने के लिए फैलाया और बाद में सेठजी की धोती भी झटककर फैला रहे थे । इतने में सेठजी आये । उन्होनें बापू के हाथ से झट धोती छीन ली और बोले : "बापू, यह क्या किया ?"

"वहीं पड़ी थी । साफ धोती पर किसी का पैर पड़ जाता, इसलिए धो दिया । इसमें क्या बुरा हुआ? सफाई के काम से बढ़कर महान् काम और कौन-सा है ?"

३५. आगाखाँ-महल में बापू का दिनक्रम

'भारत छोड़ो' आन्दोलन चल रहा था। बापूजी, कस्तूरबा, महादेवभाई, प्यारेलालजी, डॉ. गिल्डर, डॉ. सुशीला नैयर, सरोजिनीदेवी वगैरह लोग पूना में, आगाखाँ-महल में नजरबन्द थे।

श्री महादेवभाई तो 15 अगस्त को ही स्वर्ग-सिधार गये। जेल गये सप्ताहभर भी नहीं बीता था। बा और बापू के मन पर बड़ा क्रूर आघात था वह! वह सब लोग सारा दुःख पीकर रह गये।

जेल में समय कैसे कटे? रात में कभी-कभी कस्तूरबा, डॉ. गिल्डर और अन्य लोग कैरम खेलते थे। बा को कैरम बड़ा प्रिय था। वे अच्छा खेलती भी थीं।

बापू भी तरह-तरह के खेल खेलते थे। बैडमिंटन, पिंगपांग वगैरह खेलते थे। बापू पहली बार पिंगपांग खेलने आये, उस दिन वे छोटे बल्ले से गेंद लौटाने को ही थे कि इतने में वह उनके माथे से टकराकर लौट गयी। सब हँस पड़े।

एक बार सबने मजे की पोशाक पहनने का निश्चय किया। डॉ. गिल्डर ने बलूची पठान की पोशाक पहनी। बापू की हँसी रोके न रुकती थी।

डॉ. गिल्डर का जन्म-दिन आया, तो बापू ने अपने हाथ से रूमाल पर उनका नाम अंकित कर उन्हें रूमाल भेंट किया। राष्ट्र को मुक्त करनेवाला महात्मा आगाखाँ-महल में सिलाई-कढ़ाई का भी काम करता था।

परन्तु एक बात ने मुझे गदगद कर दिया। बा की अवस्था 70 के लगभग थी। बापूजी ने 70 पूरे कर लिये थे। समय काटने के लिए बापू कस्तूरबा को भूगोल सिखाते थे। पूज्य विनोबाजी कहते थे; "भूगोल जैसा सरस विषय दूसरा नहीं है।" भारत का पिता वृद्ध

कस्तूरबा को जेल में भूगोल सिखा रहा है — यह दृश्य आँख के सामने आते ही मेरा हृदय उमड़ आता है। कैसा मधुर, मंगल, सहृदय दृश्य था !

३६. टहलने का व्यायाम

दाण्डी-कूच के समय गांधीजी के साथ 80 सत्याग्रहियों की टुकड़ी थी । दण्डधारी गांधीजी अपना थैला कन्धे पर लटकाकर सबके आगे रहते थे । शहामृग (एक बड़ा और ऊँचा पक्षी) की तरह लम्बी टाँगे भरते हुए वे चलते थे । मंद गति गांधीजी को कभी पसन्द नहीं थी । घूमने जाते, तब भी तेज चलते थे । घूमना उनका व्यायाम था ।

महात्माजी के साथी सत्याग्रही थक जाते थे । अन्त में महात्माजी ने 'यंग इंडिया' में व्यायाम पर एक लेख लिखा । महात्माजी अहिंसा के उपासक थे, इसका अर्थ कई लोग यह करते हैं कि वे दुर्बलता पसंद करते थे । यह बिल्कुल गलत धारणा है । महात्माजी नीरोगी और शक्तिसम्पन्न शरीर चाहते थे । उससे भी अधिक शक्तिशाली मन चाहते थे । राष्ट्र को सत्याग्रह का सन्देश देनेवाला राष्ट्रपिता उस समय व्यायाम पर लेख लिखने लगा । और उस लेख में वे लिखते हैं: "कम-से-कम टहलने का व्यायाम तो सब कर सकते हैं । टहलना सारे व्यायामों का राजा है ।"

३७. हरिजन कार्य में एक वर्ष

महात्माजी ने सन् 1932 में हरिजनों के लिए उपवास किया । साम्प्रादयिक फैसले (कम्युनल अवार्ड) को बदलवा लिया । डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने सम्मति दी । महात्माजी ने जेल से ही हरिजन-पत्र आरम्भ किया । कुछ दिन बाद सरकार ने उन्हें छोड़ा । वे अहमदाबाद गये । साबरमती का आश्रम जब्त करने की सूचना उन्होंने सरकार को दी । आजादी की लड़ाई जारी थी । सरकार आश्रम को ले नहीं रही थी । तब महात्माजी ने उस आश्रम को हरिजन-सेवा के लिए हरिजन सेवक संघ के सुपुर्द कर दिया और स्वयं सविनय अवज्ञा का प्रचार करने के लिए निकल पड़े । क्योंकि देशभर में आन्दोलन चालू था । वे अहमदाबाद के निकट एक गाँव में गये । सरकार ने उन्हें पकड़कर यरवदा लाकर रखा । वहाँ से पहले की तरह-साप्ताहिक हरिजन के लिए लेख लिखने की सरकार से अनुमति माँगी । जिद्दी सरकार ने अनुमति नहीं दी । तब फिर से महात्माजी ने उपवास आरम्भ किया। सरकार ने फिर उन्हें छोड़ा । तब महात्माजी यरवदा गाँव में ही सत्याग्रह करने निकल पड़े। सरकार ने उन्हें फिर से पकड़ा । फिर उन्होंने हरिजन के लिए लिखने की अनुमति माँगी । सरकार ने फिर इनकार किया । राष्ट्रपिता ने फिर से उपवास शुरू किया । फिर वे रिहा किये गये । सरकार मानो गांधीजी की सत्यपरीक्षा कर रही थी । भले ही सरकार को कोई शर्म न हो, लेकिन गांधीजी तो सद्-अभिरुचि क उपासक थे । वह चूहे-बिल्ली का खेल कब तक चलता ? मदान्ध साम्राज्यशाही राष्ट्रपिता का कदम-कदम पर अपमान कर रही थी ।

आखिर महात्माजी ने तय किया कि सरकार छोड़ भी दे, तो भी एक साल जेल में ही हैं, ऐसा मानकर राजनैतिक कार्य न किया जाय । फिर अस्पृश्यता-निवारण के निमित्त सारे देश में दौरा करने का उन्होंने निश्चय किया । परन्तु प्रवास पर निकलने से पहले पर्णकुटी में उन्होंनें 21 दिन का उपवास किया । उस समय के उनके साथी स्वामी आनन्द और निजी

सचिव श्री प्यारेलालजी नासिक जेल में थे । महात्माजी ने उन्हें पत्र में लिखा : “हरिजन-कार्य के लिए धनी लोग आर्थिक सहायता तो देंगे । परन्तु उपवास के द्वारा मैं पहले आध्यात्मिक पूँजी इकट्ठा कर रहा हूँ ।”

३८. राजकुमारी को शादी में उपहार

ब्रिटिश राजकुमारी का विवाह होनेवाला था । उस समय लार्ड माउण्टबेटन भारत के वाइसराय थे । राजकुमारी को क्या भेंट दी जाय ? महात्माजी रोज इस भेंट के लिए सूत कातते थे और उस सूत का रूमाल बुनवाकर भेजनेवाले थे । यह बात केवल माउण्टबेटन को मालूम थी । गांधीजी के हाथ के सूत के रूमाल का सुन्दर उपहार ब्रिटिश राजकुमारी को उनके विवाह के अवसर पर भेजा गया । गांधीजी मानो दो राष्ट्रों के हृदयों को धागे से जोड़ रहे थे ।

खण्ड ४

प्रेम-सिन्धु

३९. सर्वत्र आत्मदर्शन का पाठ

गांधीजी बड़े दृढ़व्रती थे । जो भी व्रत उन्होंने लिया, उसे कभी तोड़ा नहीं । वे रोज काता करते थे । उनकी नित्य कताई कभी खंडित नहीं हुई । कभी-कभी खुद ही अपनी पूनी भी बना लेते थे । एक दिन उनकी कताई नहीं हो पायी थी । पूनी समाप्त हो गयी थी ।

"आज अपनी पूनी मैं ही बनाता हूँ । लाइये, धुनकी (युद्ध पिंजन) । अच्छी तरह धुन लेता हूँ।" यह कहकर राष्ट्र का पिता रूई धुनने बैठा । रात का समय था । महात्माजी तुंई-तुंई करते धुनते रहे । परन्तु हवा में नमी थी । धुनकी की ताँत नम हो जाती थी । उसमें रूई चिपक जाती थी । धुनाई अच्छी नहीं हो रही थी ।

पास ही मीराबहन बैठी थीं । वह तो साक्षात् सेवामूर्ति थीं । पंचक्रोशी में दवा लेकर घूमती रहती थीं । झोपड़ी-झोपड़ी में जाती थीं ।

"बापू, क्या ठीक से धुनाई नहीं हो रही है?"

"रूई चिपकती है । लेकिन एक उपाय है ।"

"क्या?"

"नीम की पत्ती मसलकर उसका रस ताँत पर लगायें, तो रूई चिपकती नहीं ।"

"पत्ती मैं ले आऊँ ?"

"हाँ, लाओ ।"

मीराबहन बाहर गयीं । वह नीम के पेड़ से खासी-भली टहनी ही तोड़ लायीं ।

“यह लीजिये पत्ती । टहनी ही ले आयी हूँ । पत्तियाँ खूब हैं ।”

“मुट्ठीभर पत्ती के लिए इतनी बड़ी टहनी क्यों तोड़ लायी? और इधर आओ । यह देखो, ये पत्ते कैसे सोये-हुए से दिखते हैं । व्यर्थ ही तुम टहनी ले आयी । जरूरत थी, इसलिए सिर्फ मुट्ठीभर पत्तियाँ ही लाना ठीक था न ?”

महात्माजी बोलते रहे । मीराबहन की आँखें आँसुओं से भर आयीं । पेड़-पौधों पर महात्माजी का यह प्रेम देखकर मीराबहन को एक नया ही दर्शन हुआ । भारतीयों की आध्यात्मिक वृत्ति का भाष्य ही था वह प्रवचन । सर्वत्र आत्मा के दर्शन करना सीखें, इसका मूक प्रवचन । ऐसे थे महात्माजी ‘प्रेम-सिन्धु’ ।

४०. गांधी जी की हार्दिकता

महापुरुषों के आँसुओं में और मधुर वाणी में अपार शक्ति होती है। ऋजुता ही उनका पराक्रम होता है। सुना है कि स्वामी रामतीर्थ की मन्द मुस्कान असरकारक थी। एक बार एक सज्जन वाद-विवाद करने श्री रामतीर्थ के पास पहुँचे। किन्तु रामतीर्थ का मधुर हास्य देखकर वाद करना भूल गये और प्रणाम करके लौट आये। महात्माजी के पास भी ऐसा ही जादू था।

एक बार राष्ट्रसभा (कांग्रेस) की कार्यकारिणी की बैठक थी। देशबन्धु दास कार्यकारिणी के सदस्य थे। इन्होंने अपने मित्र से कहा : "मैं आज महात्माजी से खासी चर्चा करनेवाला हूँ। सभी मुद्दे तैयार करके रखे हैं। देखें, गांधीजी क्या उत्तर देते हैं।" बैठक प्रारम्भ हुई। महात्माजी ने हँसते-हँसते प्रवेश किया। सबने नमस्कार किया। महात्माजी ने अपना निवेदन प्रस्तुत किया। अत्यन्त निर्मलता और प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किये हुए विवरण ने सभा को जीत लिया।

बापूजी ने पूछा : "किसी को कोई शंका है ?"

सदस्यों ने कहा : "सब नि:शंक हो गये हैं।"

"ठीक है। मैं जाता हूँ" – कहकर गांधीजी ने सबको प्रणाम किया और मुस्कान बिखेरते हुए चले गये।

देशबन्धु से किसी ने पूछा: "आप तो गांधीजी से चर्चा करने वाले थे न ? फिर चुप क्यों रहे ?"

देशबन्धु का उत्तर था : "बताऊँ? हमेशा ऐसा ही होता है। पूरी तैयारी करके आता हूँ, परन्तु गांधीजी के एक-एक शब्द में जो हार्दिकता टपकती है, वह मुझे जीत लेती है। हमारा बुद्धिवाद निष्प्रभ और निष्प्राण सिद्ध होता है। अंत में हृदय ही वाद-प्रिय बुद्धि को जीत लेता है।"

४१. गांधीजी की निर्भयता

सन् 1931 की बात है । सन् 1930 का स्वातंत्र्य-संग्राम सफल हुआ था । वाइसराय और महात्माजी के बीच सुलह हुई और सभी सत्याग्रही छूट गये थे । दिल्ली में गांधी-इर्विन समझौता हुआ था, उस पर मुहर लगाने के लिए कराची में कांग्रेस का अधिवेशन मार्च के अंतिम सप्ताह में होनेवाला था । किन्तु उस अधिवेशन पर काली छाया मँडरा रही थी । अधिवेशन प्रारम्भ होने-के एक-दो दिन पहले सरदार भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी दी गयी थी । सरकार और कांग्रेस के बीच सौहार्द निर्माण होने जा रहा था, ऐसे समय में उन महान् तरुण देशभकतों को फाँसी देना धृष्टता ही कही जायगी । कराची कांग्रेस में फूट पैदा हो, यह भी सरकार का हेतु रहा हो । सीमांत प्रदेश के लाल-कुर्तीवाले खुदाई खिदमतगारों की धारणा बनी थी कि फाँसी की सजा रद्द कराने में गांधीजी ने खास कोशिश नहीं की । निश्चित ही यह धारणा गलत थी । महात्माजी ने हर संभव प्रयत्न किया था । फिर भी नौजवान क्षुब्ध हो उठे थे ।

महात्माजी कराची-कांग्रेस के लिए जा रहे थे । रास्ते में लाल-कुर्तीवालों ने उन्हें काले फूल दिये । यह निषेध का प्रतीक था । वे कराची पहुँचे । अधिवेशन प्रारम्भ हुआ । उस दिन महात्माजी ने शांति से उस प्रतीक को स्वीकार किया । उसे सुरक्षित रखा । रात में एक विराट् सभा का आयोजन किया गया था । उस सभा में महात्माजी बोलनेवाले थे । प्रक्षुब्ध जवान तथा लाल-कुर्तीवालों के समूह के सामने वे बोलने जा रहे थे । महात्माजी से बार-बार विनती की गयी कि आप सभा में न जाय, भीड़ उत्तेजना में है । उन्होंने कहा : “इसीलिए तो मुझे जाना चाहिए । मुझ पर ही उन्हें क्रोध है । उसे शांत करने के लिए मुझे ही जाना चाहिए ।”

और यह महापुरुष धीर-गंभीरता के साथ निकल पड़ा । दीखने में छोटी, परन्तु आत्मशक्ति से महान् वह मूर्ति ऊँचे मंच पर चढ़ी । सामने प्रक्षुब्ध नौजवानों की भीड़ थी । एक क्षण के लिए चारों ओर शांति छा गयी । महात्माजी ने शांतिपूर्वक चारों ओर नजर घुमायी । फिर वह अमर वाणी प्रवाहित होने लगी । अन्त में गांधीजी ने कहा : मेरी यह मुट्ठीभर हड्डी आप लोग अनायास तोड़ सकते हैं । परन्तु जिस तत्व के लिए मैं खड़ा हूँ, और जिन तत्वों का मैं उपासक हूँ, उन्हें कौन तोड़ सकता है ? वे तो शाश्वत सत्य हैं ।"

सभा को भंग करने के इरादे से आये हुए, नौजवान प्रणाम करके सिसकते हुए लौट गये और राष्ट्रपिता शान्ति से अपने खेमे में लौट आया ।

४२. गांधीजी की करुणा

सन् 1930 की बात है। सत्याग्रह-संग्राम, नमक-सत्याग्रह अभी प्रारम्भ नहीं हुआ था। परन्तु महात्मा गांधी 80 सत्याग्रहियों की टुकड़ी लेकर साबरमती-आश्रम से निकल पड़े थे ! उनकी आज्ञा थी कि वे जब तक सत्याग्रह न करें, तब तक कोई न करे । महात्माजी की दाण्डी-यात्रा प्रारम्भ हुई । देशभर में तेज की लौ फैल रही थी । महात्माजी की वाणी देशभर में पहुँच रही थी । सात समुद्र पार जा रही थी । देशभर में देशभक्ति की लहरें उमड़ रही थीं ।

उस दिन महात्माजी के पड़ाव पर शाम को विराट् सभा हुई। महापुरुष की वाणी सुनकर लोग पावन हुए, उत्स्फूर्त हुए । सभा समाप्त हुई । महात्माजी ने प्रार्थना की । सत्याग्रहियों का भोजन हुआ । महात्माजी का बिस्तर लगा दिया गया । छत पर आकाश के तले महापुरुष सोया था । महात्माजी की निद्रा तो योगी के जैसी गाढ़ निद्रा थी ।

रात के दो-तीन बजे का समय था । बाहर स्वच्छ चाँदनी छिटकी थी –महात्माजी की तपस्या के समान शान्त और सुन्दर । महात्माजी उठे । उन्हें बहुत से पत्र लिखने थे । लालटेन पास में ही थी । बत्ती बड़ी करके वे लिखने बैठे ।

परन्तु लालटेन का तेल खत्म हो गया । रोशनी धीमी होने लगी । बाती ही जलने लगी । आखिर लालटेन बुझ गयी । अब क्या करें? स्वयंसेवक, सत्याग्रही सब थके-माँदे सोये हुए थे । महात्माजी ने उन्हें जगाया नहीं; वे वहीं चन्द्रमा के मन्द मधुर प्रकाश में लिखने लगे ।

किसी की नींद खुली । महात्माजी कुछ लिख रहे हैं, यह देखकर वे उनके पास आये।

“बापू, चन्द्र के प्रकाश में लिखने के लिए दिखाई देता है ? आँखों को तकलीफ नहीं होती ? आपने किसी को जगा क्यों नहीं लिया ? और क्या इन लोगों को लालटेन में पूरा तेल भरके नहीं रखना था ?” वे भाई बड़े गुस्से में बोलने लगे ।

गांधीजी शान्ति से बोले : “मुझे चाँदनी में दिख रहा है । हाँ, पढ़ना जरूर नहीं हो पाता । सोने दो सबको। सब थके हैं । आप भी शान्ति से कुछ देर सो लीजिये । अभी काफी रात है।”

स्वयंसेवकों को न जगाकर, चाँदनी में लिखनेवाली राष्ट्रपिता की वह स्नेहमयी मूर्ति आँखों के सामने आते ही मेरा जी भर आता है ।

४३. गांधीजी की वत्सलता

उन दिनों महात्माजी दक्षिण अफ्रीका में थे । एक बड़ा खेत लेकर वहाँ 'फिनिक्स' नाम से उन्होंने आश्रम शुरू किया था । सबने शरीर-श्रम का व्रत लिया था । महात्माजी तड़के उठते थे । अनाज पीसते थे, पानी भरते थे, जूता गाँठते थे, बढ़ईगीरी करते थे । और भी अनेक काम करते थे । सबकी देखभाल भी वे ही करते थे ।

आश्रम में एक भाई की लड़की बहुत बीमार थी । गांधीजी उसे गोद में लेते थे । वह लड़की गांधीजी से चिपकर बैठती थी । दिनभर तो दूसरे कामों से उन्हें फुरसत नहीं मिलती थी ।

शाम हुई । अंधकार की छाया फैलने लगी । अनन्त आकाश के नीचे आश्रमवासी प्रार्थना के लिए एकत्र हुए । वह देखो, बापू आये । पलथी लगाकर बैठे । लेकिन उनकी गोद में वह क्या है ? वही छोटी बीमार बच्ची । थके-माँदे घर लौटे बापू उस बच्ची को गोद में लेकर टहल रहे थे । वह बच्ची उनसे लिपटकर सोयी हुई थी । इतने में प्रार्थना की घंटी बजी । वह बच्ची कहीं जाग न पड़े, इसलिए उसे उसी तरह गोद में लिये हुए बापू आये । प्यार से, आहिस्ते से उसे अपनी गोद में लिटा लिया । वह नन्हीं बच्ची सोयी थी । प्रार्थना प्रारम्भ हुई । गांधीजी की गोद में लेटी वह छोटी बच्ची और गांधीजी, दोनों विश्वमाता से एकरूप बन गये । अनन्त आकाश के नीचे गोद में बीमार बच्ची को लेकर प्रार्थना में लीन बापू ! कितना हृदयस्पर्शी दृश्य !

४४. वचन-पूर्ति

गांधीजी तिथल में थे, तब एक दिन बोर्डी स्थित गोखले-शिक्षण-संस्था के एक शिक्षक श्री ग. म. केलकर वहाँ आये । गांधीजी की उनके साथ अच्छी दोस्ती हो गयी, क्योंकि गांधीजी गोखलेजी को अपना गुरु मानते थे । ये शिक्षक बापूजी के सहवास में 3-4 दिन ही रहे थे । लौटते समय उन्होंने गांधीजी से कहा : "बापूजी, आप भी एक बार बोर्डी आइये । काका (कालेलकर) तो 2-4 महीने वहाँ अपने स्वास्थ्य के लिए आये थे और उस निसर्गरम्य वातावरण में उनका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया था ।

बापू ने कहा : "अच्छी बात है । मैं बीमार पड़ूँगा, तब बोर्डी जरूय आऊँगा ।" यह सुनकर शिक्षक को बुरा लगा । वे बोले : "बोर्डी आने के लिए आप बीमार न पड़िये । स्वस्थ ही आइये ।"

बापू ने कहा : "आऊँगा, परन्तु एक शर्त है । आप जिस गाँव में हैं, वहाँ 100 घरों को खादीधारी बनाइये और ऐसे 100 घर बनाइये कि जहाँ एक हरिजन को वे अपने घर में रखें। तब मैं बोर्डी अवश्य आऊँगा ।"

शिक्षक ने कोई जवाब नहीं दिया । सामान्य-व्यक्ति से भी कुछ-न-कुछ उपयोगी कार्म लेने की असामान्य कला बापूजी में भरपूर थी ।

वे भाई बापू की शर्त पूरी नहीं कर सके । बापूजी का अत्यन्त प्रिय कार्य 'हरिजन सेवा' का था। उसमें वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से काफी मदद करते थे । शर्त पूरी न होने के कारण गांधीजी कभी बोर्डी नहीं गये । लेकिन मृत्यु के बाद भी गांधीजी ने अपने वचन का पालन किया । 'भस्मी' के रूप में गांधीजी बोर्डी गये और शिक्षक को दिया गया वचन इस तरह पूरा हुआ । दिये गये वचन को प्राणपण से निभाने में ही शील-सर्वस्व समाया हुआ है, यह बापूजी का महान् उपदेश था ।

४५. सबका ख्याल रखनेवाले बापू

एक बार कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक हो रही थी । काफी देर तक बैठक चलती रही । लोग ऊबने लगे । बात गांधीजी के ध्यान में आ गयी । वे बोले :

"आप सब अब चाय पीकर आइये । आपके चाय पीने का समय हुआ होगा ।"

"वैसी खास आवश्यकता नहीं है । और कुछ समय बैठेंगे और बाद में चाय पियेंगे।"

"सब समय पर होना चाहिये । बाद में क्यों ? आप परेशान तो दिखाई दे रहे हैं । जाइये, चाय पीकर आइये । चाय के लिए क्या आग्रह की जरूरत है ?" गांधीजी हँसते हुए बोले । सब लोग हँस पड़े । ऐसा था राष्ट्र का पिता, सबका खयाल रखनेवाला । एक बार महादेवभाई को रात में देर तक काम करना पड़ा, तो बापूजी ने उनके लिए चाय तैयार करवा दी ! सरदार चाय पीते थे । परन्तु सन्, 1932 में यरवदा-जेल में गांधीजी के साथ थे, तब चूँकि गांधीजी चाय नहीं पीते थे, इसलिए वे भी नहीं पीते थे । महान् व्यक्तियों की महान् बातें ! !

४६. दो नजरबन्द

उन दिनों महात्माजी पूना के आगाखाँ-महल में बन्दी थे। वे सन् 1942 की आजादी की लड़ाई के उज्ज्वल दिन थे। 'चले जाओ' का जंग छिड़ गया था और अचानक महात्माजी का महादेव भगवान् के पास चला गया। बापूजी का दाहिन हाथ गया। उनकी व्यथा वे ही जानें ! जहाँ दाह-संस्कार हुआ, वहाँ गांधीजी ने छोटी सी समाधि बनवायी। वृक्ष लगाया। रोज वे उस समाधि के पास जाते थे और पुष्पांजलि चढ़ाते थे। गांधीजी भाव-सिन्धु थे।

एक दिन राष्ट्र का पिता महादेवभाई की समाधि पर रोज की तरह जाकर लौट रहा था। उस छोटे-से सँकरे रास्ते से वे आ रहे थे। इतने में बाड़ में उस पार उन्हें हिरन का एक निष्पाप शिशु दिखाई दिया। वह शिशु बापू की ओर करुण-दृष्टि से देख रहा था। बापू बन्दी थे। बापू देखते रहे। भरे हुए अन्त:करण से वे चले गये। सन्तों को सबके प्रति प्रेम होता है। सन्त तुकाराम कहते थे "वृक्षवल्ली और वनचर हमारे सगे-सम्बन्धी हैं।" भारतीय संस्कृति का नाम लेते ही आश्रम, हिरण आँखों के सामने आ जाते हैं। उस मृगशावक को देखकर बापू को कहीं महादेव की आत्मा तो याद नहीं आयी ?

अगले दिन जेल के अधिकारी गये। बापू ने कहा : "उधर हिरन है, वह भी नजरबन्द है और मैं भी नजरबन्द हूँ। हम दोनों को मिलने की अनुमति रहे।"

शंकाशील अधिकरी ने उस हिरन को ही वहाँ से हटा दिया ! बापू को वह हिरन फिर कभी नहीं दिखाई दिया।

४७. बापू की गोद में साँप

महात्माजी ने प्रयत्नपूर्वक अपने जीवन से भय को मिटाया था । बचपन में अँधेरे में जाने से डरनेवाला यह मोहनदास आगे चलकर निर्भयता का मूर्त रूप बना ।

साबरमती-आश्रम की बात है । एक बार बैठे थे, तब एक साँप उनकी गोद में ऊपर से गिर पड़ा । गांधीजी उसकी ओर देखते रहे । वह क्या गांधीजी की गोद में क्षणभर के लिए लेटने आया था ? प्रेमामृत का मिठास चखने आया था ? जिसे सारे विश्व में परमेश्वर दीखता है, उसे किसी का डर क्यों लगेगा?

एक बार किसी ने गांधीजी से पूछा :

“गांधीजी, सामने से बाघ आये, तो आप क्या करेंगे ?”

बापू बोले : “मैं तो निर्भय होकर उसके आगे से निकलूँगा । मेरे साथ क्या करना है, यह बाघ तय करे ।

४८. आजाद भारत का पहला राष्ट्रपति कौन ?

भारत का नया संविधान बन रहा था । शीघ्र ही वह पूरा हो गया । पण्डित जवाहरलाल बड़े अधीर हो रहे थे । संविधान के स्वीकृत होते ही वे भारत को 'लोकतांत्रिक राष्ट्र' घोषित करनेवाले थे ।

राष्ट्रपिता जीवित नहीं थे । परन्तु वे जानते थे कि भारत का संविधान कभी-न-कभी पूरा होगा और भारत लोकतांत्रिक सार्वभौम राष्ट्र बनेगा । लोकतांत्रिक राष्ट्र में नये संविधान के अनुसार कोई अध्यक्ष भी चुना जाएगा । स्वतंत्र भारत का पहला अध्यक्ष ? किसे मिलेगा वह मान ? किसी को भी मिले ।

इस राष्ट्र का प्रथम अध्यक्ष कौन हो — इस बारे में गांधीजी क्या सोचते थे ?

उस दिन दिल्ली की भंगी-बस्ती में सभा थी । हरिजन-बस्ती में आज सायं-प्रार्थना होगी, वहीं प्रार्थनोत्तर प्रवचन होगा । उस प्रवचन का उनका वह महान् उद्गार तुम्हें सुनाऊँ ? दिल्ली डायरी में वह है । महात्माजी बोले : "मेरी तमन्ना है कि इस देश का पहला अध्यक्ष कोई भंगी बालिका बने ।"

'पद्दलित लोग आगे आयें', इसकी यह कैसी छटपटाहट ! वह वचन पढ़कर मुझे मुहम्मद पैगम्बर का इसी तरह का उद्‌गार याद आता है । एक ईरानी गुलाम को पैगम्बर ने गुलामी से मुक्त किया और कहा : "मैं चाहता हूँ कि मेरे बाद का खलीफा यह बने ।" जो कल तक गुलाम था, वह सारे मुसलमानों का प्रमुख बने — यह पैगम्बर की इच्छा थी, तो भंगी बालिका भारत की प्रथम अध्यक्षा बने — यह गांधीजी की चाह थी । महान् महान् ही होते हैं । वे कहीं भी क्यों न जनमें ।

४९. 'आप ही की गाड़ी में जाऊँगा'

गोलमेज-परिषद् के लिए गांधीजी लन्दन गये थे। तब की अनेक कहानियाँ है। एक दिन गिल्ड हाल में सभा थी। 'स्वेच्छा से लिया हुआ गरीबी का व्रत' — इस विषय पर गांधीजी बोलनेवाले थे। मिस मांड रायडन नामक महिला गांधीजी को अपनी मोटर में सभा-स्थान पर ले गयीं। उस महिला के पास डी. डी. की पदवी थी।

मोटर में जाते समय गांधीजी ने पूछा : "डी. डी. का क्या अर्थ है ?"

रायडन बहन ने कहा : "उसका अर्थ यह है डॉक्टरेट आफ डिविनिटी (ईश्वर-शास्त्र में पारंगत)। ग्लासगो-विश्वविद्यालय ने मुझे यह पदवी दी है।"

"तो ईश्वर के विषय में आपको सब कुछ मालूम होगा।" गांधीजी ने मुस्कारते हुए पूछा। सभा-स्थान आ गया ?

गांधीजी ने कहा : "सभा के बाद आपकी ही गाड़ी से लौटूँगा ख्याल रखियेगा।"

उस बहन को वह सन्मान प्रतीत हुआ। कइयों की इच्छा होती थी कि गांधीजी उनकी मोटर में बैठकर जायँ। संसार के एक महापुरुष को अपनी मोटर में बैठाने का सद्भाग्य पाने के लिए कौन उत्सुक नहीं होगा ?

सभा समाप्त हुई। सभा-स्थान के बाहर भारी भीड़ थी। तिस पर वर्षा भी हो रही थी। वहाँ सैकड़ों मोटरें खड़ी थीं। उस बहन को अपनी मोटर जल्दी मिल नहीं रही थी। गांधीजी वर्षा में खड़े थे। चारों ओर अनेक मोटरें थीं। महात्माजी को ले जाने का सुयोग पाने की वे सब मोटेरें उत्सुकता से राह देख रही थीं। हवा में बेहद ठंडक आ गयी। बापूजी के बदन पर गरम कपड़ा नहीं था। वह बहन शरमायी।

रायडन बहन ने कहा : “गांधीजी, आप किसी मोटर से जाइये । मुझे अपनी गाड़ी मिल नहीं रही है । आप रुकिये नहीं ।”

“लेकिन आपकी गाड़ी मिलने तक मैं रुकूँगा ।” गांधीजी शान्ति से बोले ।

उस बहन को ऐसा आनन्द हुआ, मानो राजमुकुट मिल गया हो । भीड़ कम हुई । मोटर मिल गयी । बापू उसी मोटर से गये ! उस बहन को बड़ा समाधान मिला !

५०. छोटे सेवकों की याद

गांधीजी बड़े संजीदा व्यक्ति थे । उनकी स्मरण-शक्ति बड़ी तेज थी । हजारों छोटे-बड़े सेवकों की उन्हें याद रहती थी । स्मूति एक आध्यात्मिक गुण है, सात्विक गुण है, अर्जुन गीता के अन्त में कहता है : "मोह गया, स्मृति प्राप्त हुई ।" स्मूति का मतलब है दक्षता । 'दक्ष ही मोक्ष पाता है ।' बावले को, बार-बार भूलनेवाले को सिद्धि कैसे मिलेगी ?

महात्माजी बारडोली से वर्धा जा रहे थे । अमलनेर स्टेशन पर उन्हें आहार दिया गया। शाम हुई, गाड़ी खुली । एरंडोल स्टेशन भी गया । और अगले चावलखेड़े स्टेशन पर गाड़ी रुकी । आसपास के देहातों से सैकड़ों किसान आये थे । गांधीजी के डिब्बे के पास वे जमा हुए । गांधीजी खिड़की के पास शान्ति से बैठे थे ।

'हरिजनों के वास्ते' – कहकर उन्होंने अपना हाथ फैलाया । और प्रत्येक किसान अपने घर से इसी हेतु लाया गया आना-दो पैसा राष्ट्रपिता के हाथ पर रखता गया । हर व्यक्ति पैसा रखता, प्रणाम करता, दूर हो जाता । गांधीजी को समाधान हुआ । गाड़ी चल पड़ी । किसानों ने जय-जयकार किया । महादेवभाई और प्यारेलालजी पैसे गिनने में लगे ।

"यह कौन-सा गाँव था?" गांधीजी ने पूछा ।

"एरंडोल के पास के ये सब गाँव हैं । खाली हाथ एक भी नहीं आया था ।" किसी ने कहा ।

"एरंडोल ? ठीक है । शंकरभाऊ काबरे का गाँव । शंकरभाऊ वहाँ का निरहंकारी सेवक ।" एरंडोल का नाम सुनते ही गांधीजी को शंकरभाऊ का स्मरण हुआ । उनकी निरहंकारता का उन्होंने जिक्र किया । मैं उसी डिब्बे में था । दूर-दूर के सेवकों की उनकी यह याद देखकर मेरा हृदय भर आया । सेवकों की ऐसी कद्र करनेवाले को सेवकों की

कभी कमी नहीं पड़ती । गांधीजी ने क्या यों ही देशभर में हजारों व्यक्तियों को खड़ा किया था ? सहृदय मानवता के वे भण्डार थे ।

५१. नन्हा गोपू

महात्माजी 'राष्ट्रपिता' थे । सब उनकी सन्तान थे । उन्हें किसी चीज की आसक्ति नहीं थी । अन्त में वे दिल्ली में थे । महात्माजी के चिरंजीव श्री देवदासभाई उनसे मिलने जाते थे। देवदासभाई अपने छोटे लड़के गोपू को भी साथ ले जाते थे । वह तीन साल का था । उसके आते ही उसे वे प्रेम से गोद में लेते थे, हँसी-विनोद करते थे ।

कभी गोपू साथ नहीं आता, तो गांधीजी पूछते थे: " आज गोपू क्यों नहीं आया ? वह नहीं आया तो मुझे खोया-खोया सा लगता है ।

बापू तो चले गये । बापू उस नन्हें गोपू का जिन शब्दों में स्वागत करते थे, उसकी हूबहू नकल गोपू घर में करता था । और देवदासभाई तथा उनकी पत्नी की आँखें भर आती थीं ।

५२. 'मैं बेसहारा हो गया'

गांधीजी सेवाग्राम में थे । जमनालालजी अन्य सारे काम छोड़कर गो-सेवा के लिए जीवन समर्पित करने का विचार कर रहे थे । उस विचार ने उन्हें पागल बना रखा था । परन्तु जमनालालजी बीमार हुए । डॉक्टर दौड़े आये । सेवाग्राम से महात्माजी आये । जमनालालजी ठीक नहीं हुए । ईश्वरके पास चले गये । विनोबाजी ने कहा : "उनके मन में जो विचार उफन रहा था, वह देह में समा नहीं सका । देह तोड़कर वे बाहर निकल गये ।" गांधीजी बहुत दुःखी हुए । वास्तव में वे थे स्थितप्रज्ञ । परन्तु गांधीजी के जीवन में करुण मानवता थी । दिन बीत गया । लेकिन उस रात गांधीजी को नींद नहीं आ रही थी । बोले : "मैं अब बेसहारा हो गया, मेरा भार कौन सँभालेगा ?"

५३. मगनलाल गांधी

महात्माजी की जीवन-साधना में संसार के हजारों छोटे-बड़े लोग शामिल हुए थे। परन्तु मंगनलालभाई तो सेवकों के मृकूटमणि थे। ज्यों ही महात्माजी के मन में कोई विचार आता, त्यों ही उसे प्रत्यक्ष कार्यरूप में परिणत करने के लिए मगनभाई अपनी सारी अन्तर्बाह्य शक्ति लगा देते थे। सन् 1928 में उनका देहान्त हुआ। 'मंगल मंदिर खोलो, दयामय' – इस भजन को दुहराते, गुनगुनाते वे ईश्वर के पास गये।

महात्माजी का दुःख असीम था। बोले : "उसकी मृत्यु से मैं विधवा हो गया।"

५४. बच्चे का काम पहले

महात्माजी उस समय महाबलेश्वचर में थे । उनसे मिलने के लिए दिल्ली से देवदासभाई भी बाल-बच्चों के साथ आये थे । गांधीजी के चारों ओर सारी दुनिया के कई मसले थे । नेता मिलने आते थे । संसार भर के पत्रकार आते थे । चर्चा चलती थी । पत्र-व्यवहार भी रहता था ।

वह देखो, देवदासभाई का बच्चा गणित का सवाल हल करने में लीन है । लेकिन उससे हल नहीं हो रहा है । वह लड़का कइयों के पास जाकर पूछ रहा है कि "यह सवाल कैसे हल करें, आप बतायेंगे ?" लेकिन इस बच्चे की प्रार्थना की ओर कौन ध्यान देगा ? आखिर वह नन्हा बच्चा अपने दादाजी के पास गया और बोला : "बापू, इतने लोग हैं, पर कोई मुझे सवाल हल करके नहीं देता है । आप बतायेंगे ?"

बापू साप्ताहिक हरिजन के लिए लेख लिखने में मशगूल थे । परन्तु उस बालब्रह्म को वे दूर कैस करते ? प्रेम से बोले : "आ, मेरे पास । तुझे क्या चाहिए ? उन लोगों के पास बहुत काम रहते हैं । तूने, पहले ही मेरे पास आकर पूछा क्यों नहीं ? अब कहीं कोई दिक्कत आ जाय, तो सीधे मेरे पास आ जाना । खैर ! देखूँ तो, तेरा सवाल ?"

महत्वपूर्ण लेख लिखने में तल्लीन बापू अब नाती का कापी लेकर उसे उसका सवाल समझाने में लग गये ।

५५. अहिंसा का पाठ

सन् 1937-38 की बात है । कई प्रान्तों में कांग्रेस की सरकारें थीं । बंगाल में फजलुल हक का मंत्रिमण्डल था । कांग्रेस-सरकार ने राजनैतिक कैदियों को मुक्त कर दिया । परन्तु बंगाल के राजनैतिक बंदियों का क्या होगा ? महात्माजी सारे राष्ट्र के पिता थे। वे चुप थोड़े ही रहनेवाले थे । वे कलकत्ता गये । बंगाल के गवर्नर और मुख्यमंत्री फजलुल हक से मिले । गांधीजी से कहा गया कि यदि वे राजनैतिक कैदी हिंसा का त्याग करेंगे, तो उन्हें छोड़ा जायगा । गांधीजी जेल में जाकर कैदियों से मिले और उन्हें हिंसा की व्यर्थता समझाने लगे ।

उन दिनों गांधीजी को रक्तचाप की तकलीफ थी । फिर भी वे राजबन्दियों की मुक्ति के लिए प्रयत्न कर रहे थे । गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने लिखा : "गाधीजी पर भरोसा करो । उनकी बात मानो ।"

वह देखो, गांधीजी जेल से चर्चा करके बाहर आ रहे हैं । दोनों हाथों से सिर दबाये जा रहे हैं । क्या रक्तचाप बढ़ गया ? राष्ट्रपिता के ऐसे संस्मरण याद आते ही आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलछता आते हैं ।

५६. सोने का खिलौना

किसी भाई के यहाँ महात्माजी ठहरे थे । कुछ महत्वपूर्ण लेख लिख रहे थे । वहीं पास में एक छोटा बच्चा बहुत शोर मचा रहा था । कागज-पत्र बिखेर रहा था । परन्तू बापू ने उससे कुछ नहीं कहा । उसे खेलने-कूदने दिया । इतने में बच्चा रोने लगा । अब ? हरिजन-कार्य के लिए किसी का दिया हुआ एक गहना गांधीजी के पास रखा हुआ था । गांधीजी ने वह सोने का गहना सोने-जैसे उस नन्हें शिशु को खेलने के लिए दे दिया । बच्चा खेलने लगा, बापू लिखने लगे ।

खण्ड ५

ईश्वर-भक्त

५७. प्रार्थना पर श्रद्धा

महात्माजी का जीवन प्रार्थनामय था । बिना हवा के वे एक बार जी सकते, परन्तु प्रार्थना के बिना जी नहीं सकते थे । प्रार्थना उनके जीवन का आधार थी । ईश्वर पर उनकी श्रद्धा थी । अपने को साक्षात्कार हो गया है, ऐसी भाषा में वे नहीं बोलते थे, परन्तु यह कहते थे कि आप मेरे सामने हैं, यह जितना सत्य है, उतना यह भी सत्य है कि ईश्वर है । मुझे उसका भान होता है, उस अनंत सत्य का कभी-कभी धूमिल दर्शन होता है ।

उन दिनों महात्माजी अफ्रीका में थे । जीवन की साधना जारी थी । भारत के भावी जीवन की सम्पूर्ण बुनियाद अफ्रीका में डाली जा रही थी । सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया था । भारतीय जनता दृढ़ निश्चय के साथ खड़ी थी । अफ्रीका में बसे भारतीय नर-नारी नव इतिहास का निर्माण कर रहे थे । शान्त-दान्त महात्माजी दिव्य मार्गदर्शन कर रहे थे ।

आज कुछ गम्भीर बात थी । जनरल स्मट्स तो फौलादी शख्स थे । गांधीजी के आन्दोलन को मिट्टी में मिला देने पर तुले हुए थे । परन्तु जो भी हो, आत्मशक्ति का प्रभाव उन पर भी पड़ रहा था । गांधीजी को उन्होंने बुला भेजा । जोहान्सबर्ग जाने के लिए गांधीजी निकले । स्टेशन पर पोलक और उनकी धर्मपत्नी, दोनों आये थे । महात्माजी और पोलक गंभीरतापूर्वक बात कर रहे थे, परन्तु बात रुक गयी । सफलता मिलेगी या विफलता ?

पोलक की पत्नी चिन्तित थीं । उनके मन में रह-रहकर यही आता था कि गांधीजी के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

"बापू भाई" – उन्होंने आवाज दी । उन दिनों गांधीजी को लोग बापू के बदले भाई कहकर पुकारते थे । पोलक छोटे भाई थे, तो गांधीजी बड़े भाई ।

गांधीजी ने पूछा : "क्या बात है? तुम ऐसी चिन्तित क्यों हो ?"

"आपके लिए मैं क्या करूँ ? आप तो वार्ता के लिए जा रहे हैं । मन ऊपर-नीचे हो रहा है । क्या करूँ ?"

"प्रार्थना करो । अन्तःकरणपूर्वक प्रार्थना करो । इससे अधिक करने जैसा दूसरा कया हो सकता है ? गांधीजी शान्ति से बोले ।

५८. भगवान भरोसे

सन् 1919-20 । आन्दोलन के दिन थे । गांधीजी देशभर में बिजली की तरह संचार कर रहे थे । असम का प्रवास आरम्भ हुआ । असम में आवागमन की बहुत असुविधा थी । सर्वत्र प्रचंड नदियाँ हैं । ऊँचे पर्वत, गहरी कन्दराएँ ! गाड़ियाँ विशेष हैं नहीं । एक बार एक गाड़ी गयी, तो दूसरी कब मिलेगी, इसका कोई ठिकाना नहीं । एक बार तो मालगाड़ी के डिब्बे में ही बैठकर जाना पड़ा ।

रात का समय था । गांधीजी को एक डिब्बे में बैठाया गया था । उस छोटे डिब्बे में वे अकेले थे । अपेक्षा यह थी कि रातभर उन्हें आराम मिले । परन्तु गाड़ी के पिछले डिब्बे छूट गये और लाइन पर ही रह गये । सामने की गाड़ी आगे चली गयी । गार्ड बीच में था । काफी दूर निकल जाने के बाद उसके ध्यान में आया कि पीछे के कुछ डिब्बे छूट गये हैं । गाड़ी रुकी । गांधीजी का डिब्बा कहाँ है ? वह तो पीछे छूट गया ! कार्यकर्ता चिन्ता के मारे परेशान हुए । पीछे से कोई गाड़ी आ जाय तो ? गाड़ी को धीरे-धीरे पीछे लाया गया । कार्यकर्ता डिब्बे के फाटक पर खड़े थे । काफी सावधानी रखी गयी कि गाड़ी जाकर गांधीजी के डिब्बे को जोर से धक्का न दे । गांधीजी का डिब्बा दीख पड़ा । गांधीजी जाग गये थे और अपनी मधुर मुसकान में बैठे थे ।

मित्रों ने कहा: “बापू, आज कितनी बड़ी आफत आ गयी थी !” बापू ने हँसकर कहा: “अगर पीछे से कोई गाड़ी आती तो शायद प्रकृति माता की गोद में चला जाता । बड़ा मजा आता ।”

५९. कृपा किसकी ?

गांधीजी हमेशा रेल के तीसरे दर्जे में ही प्रवास करते थे । वे गरीबों के जीवन से एकरूप हो गये थे । उन्हें इस दर्जे में प्रवास करने से अनेक प्रकार के अनुभव भी मिलते थे। गांधीजी की नम्रता, निरहंकारता ऐसे समय सुन्दर ढंग से प्रकट होती थी ।

एक बार गांधीजी तीसरे दर्जे में इसी तरह सफर कर रहे थे । एक स्टेशन पर खूब भीड़ थी । गांधीजी इस गाड़ी से जा रहे हैं, यह खबर लोगों को नहीं थी । नहीं तो दर्शन के लिए हजारों लोग आ गये होते । 'महातमा गांधी की जय' के जयघोष से सारा इलाका गूँज उठा होता, परन्तु आज उस प्रकार जयघोष नहीं हो रहा था । गाड़ी उस स्टेशन पर बहुत कम समय के लिए रुकनेवाली थी । वह देखो, एक भाई आ रहा है । कितना सामान है उसका । कोई सेठ तो नहीं ? खुद चढ़ने से पहले वह अपना सामान गाड़ी में चढ़ा रहा था । गाड़ी खुल गयी । कुली अपनी मजदूरी के लिए जल्दी मचा रहा था । सेठजी हड़बड़ी में चढ़ने लगे । गिरने ही वाले थे । कुली ने सेठजी के शरीर को जैसे-तैसे अन्दर धकेल दिया । सेठजी गिरते-गिरते बचे । वे अंदर अपने सामान पर बैठे । जान में जान आयी, तब सारा सामान ठीक से लगा लिया ।

थोड़ी देर में बड़ा स्टेशन आया । वहाँ हजारों लोग बापूजी के दर्शनार्थ जमा हुए थे । जयजयकार से दसों दिशाएँ गूँज रही थीं । महात्माजी ने सबको दर्शन दिये । 'हरिजनों के वास्ते' — कहकर हाथ आगे किया । लोगों ने अपने पास जो कुछ था, वही दिया । फिर गाड़ी खुली । महादेवभाई और अन्य लोग पैसे गिनने लगे ।

सेठजी के ध्यान में आया कि वे उसी डिब्बे में चढ़ आये हैं, जिसमें गांधीजी हैं, इसी कारण गिरते-गिरते बचे । महात्माजी की कृपा ! उस सेठजी का हृदय कृतज्ञता से भर आया

। वह धीरे से उठे । डरते-डरते गांधीजी के पास गये । थर-थर काँपते हुए कुछ देर खड़े रहे और गांधीजी के पैरों पर गिर पड़े ।

“यह क्या ? क्या हुआ? क्या चाहते हो ?” — गांधीजी ने पूछा ।

“महाराज ! आप इस डिब्बे में थे, मुझे मालूम ही नहीं था । मैं पिछले स्टेशन पर चढ़ते समय गिरनेवाला था । लेकिन बच गया । यह आपकी कृपा है ।”

महात्माजी ने गम्भीरता से कहा : “मैं इस डिब्बे में था, इसलिए आप गिरनेवाले थे । बच गये, ईश्वर की कूपा से ।”

६०. 'वह दूर है, फिर भी निरन्तर पास है'

गांधीजी का उपवास आरम्भ हुआ। नासिक-जेल में प्यारेलालजी बीमार थे। वे कहते थे : "बापूजी के सभी उपवासों के समय मैं उनके पास रहा हूँ। एनिमा कितना देना है, पानी कितना और कैसा देना है, सब मुझे मालूम है। परन्तु इस समय मैं उनके पास नहीं हूँ।"

गांधीजी से पत्र आया : "उपनिषद् में कहा है, '**तद्दूरे तद्वंन्तिके**' – आत्मा दूर भी है, पास भी है। दूर रहनेवाली आत्मा निकट भी है, ऐसा अनुभव ऐसे ही प्रसंगों में करना होता है। है न ?"

६१. राम-नाम का पोषण

महात्माजी का उपवास जारी था। नासिक-जेल में उनके पत्र आते थे। पत्रों में अपने उपवास के बारे में अधिक न लिखकर स्वामी आनन्द के स्वास्थ्य की खबर पूछते थे। उपवास में भी वे दूसरों की चिंता करते थे। एक बार के पत्र में लिखा था :

"यह सच है कि मैं अन्न नहीं लेता हूँ। पानी के सिवा कोई अन्य रस नहीं लेता हूँ। परन्तु राम-नाम का रस तो पोषण दे ही रहा है।"

६२. बापू की निद्रा

इसी उपवास के बीच महादेवभाई का लिखा एक पत्र नासिक-जेल में आया, उसका स्मरण आ रहा है । उपवास जारी था । पर्णकुटी के बरामदे में चौकी पर महापुरुष पड़ा था । उन्हें कुछ देर नींद आ गयी थी । चारों ओर सुन्दर गम्भीर सृष्टि थी । महादेवभाई ने लिखा:

“बापू सोये हैं । एक नन्हें शिशु के समान सोये हैं । मानो विराट् सृष्टिमाता के गोद में शिशु सो रहा हो, कितना भव्य और उदात्त दृश्य है !”

६३. 'ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा'

सेवाग्राम का निवासकाल । महात्माजी नित्य प्राय : घूमने जाते थे । घूमकर लौटते समय कोई बीमार हो तो उसकी कुटिया में जाकर पूछताछ करते थे । एक बार एक झोपड़ी के पास वे आये। उनके कानों में यह सुन्दर अभंग सुनाई पड़ा ।

"सन्त जेणें व्हावें । जग-बोलणें सोसावें
तरोच अंगीं थोरपण । जया नाहीं अभिमान
थोरपण जेथें वसे । तेथें भूतदया असे
रागैं भरावें कवणासीं । आपण ब्रह्म सर्व देशीं
ऐशी समदृष्टि करा । ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा ॥

विश्व झालिया वन्हि संतमुखें व्हावें पाणी
तुम्ही तरोन विश्व तारा । ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा ॥
मजवरी दया करा । ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा ॥ " ?

— जिसे सन्त बनना हो, उसे संसार की बातें सहनी होंगी । महानता तभी मिलेगी, जब मन में अभिमान नहीं होगा । किस पर क्रोध करें जब स्वयं ब्रह्म ही सर्वत्र है । हे ज्ञानेश्वर, ऐसी समदृष्टि रखो और परदा खोलो । सारा विश्व अग्नि बन जाय, तो सन्त की वाणी को जल बनना होगा । हे ज्ञानेश्वर, तुम स्वयं तर जाओ, औरों को तारो, परदा खोलो । मुझ पर कृपा करो, ज्ञानेश्वर, परदा खोलो ।

श्री परचुरे शास्त्री वह अभंग अपनी सुस्वर मीठी आवाज में गा रहे थे । किवाड़ खोलने के बारे में सन्त मुक्ताबाई का वह प्रसिद्ध अभंग है । उसके जो चरण याद आते थे, वही शास्त्रीजी गा रहे थे । परचुरे शास्त्रीजी को वह अभंग अत्यन्त प्रिय था ।

थोड़ी देर में समाधि उतरने के बाद गांधीजी झोपड़ी के अन्दर गये ।

बोले :

शास्त्रीजी यह अभंग मुझे लिख दीजिये । मैं उसे कण्ठस्थ करूँगा । कितना प्रेमभरा और कितना उदात्त है यह अभंग ! किसका है ?"

"मुक्ताबाई का । ज्ञानेश्वर महाराज की वह छोटी बहन थी । एक बार आलन्दी में ज्ञानेश्वर सड़क पर से जा रहे थे । कुछ निंदक लोग उनकी ओर डँगली उठाकर चिल्ला उठे : 'अरे देखो वह संन्यासी का बच्चा सामने दीख पड़ा, हाय-हाय, अपशकुन हो गया ।' ज्ञानेश्वर का मन बैठ गया । कमरे में जाकर किवाड़ बन्द करके बैठ गये । मुक्ताबाई पानी लेने गयी थीं । आयीं तो किवाड़ बन्द देखा । तब उन्होंने यह अभंग सुनाया । वह 'ताटी के अभंग' के नाम से प्रसिद्ध है । प्रत्येक अभंग के अन्त में 'ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा आता है ।"

परचुरे शास्त्रीजी को पूरा अभंग याद नहीं आ रहा था । लेकिन उन्होंने पूना के प्रा. दत्तोपंत पोतदार को पत्र लिखकर सारे अभंग मँगवा लिये और गांधीजी को लिखकर दे दिये।

* * * * *